Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Samaj Foundation Chennai

हौंव समाचार जगत

१९६८

C.K
L I
HARID

Domain. Gurukul Kangri Coll

078085
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४१ 1966

~~078082~~
078085

STOCK VERIFICATION
Central Library

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांगड़ी विश्वविद्यालय पुस्तकालय

हिंदी समाचार जगत

RT-0340

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा-मंत्रालय

भारत सरकार

जय हिंदी, जय नागरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-दिवस * * * हिन्दी समाचार जगत

14 सितम्बर 1966 रजिस्ट्रेशन संख्या-----

उद्देश्य

1. देश और विदेश में हिंदी के प्रचार, प्रसार, विकास तथा समृद्धि के लिए सरकारी और गैर-सरकारी माध्यम से किए जाने वाले प्रयत्नों का आकलन और प्रकाशन ।

2. हिंदी के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार और प्रगति से संबंधित समाचारों का संकलन और प्रकाशन ।

नियम

1. पत्रक प्रति मास प्रथम सप्ताह में प्रकाशित होगा ।

2. पत्रक की भाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी ।

3. केन्द्रीय हिंदी निदेशालय (शिक्षा-मंत्रालय) के निदेशक पत्रक के संपादन-परामर्श-मंडल के अध्यक्ष होंगे; उपनिदेशक (प्रकाशन) और संपादक (प्रकाशन) सदस्य होंगे तथा संपादक (हिंदी) सदस्य-सचिव होंगे ।

4. पत्रक का प्रकाशन के० हिंदी निदेशालय के निदेशक द्वारा किया जाएगा ।

5. नि:शुल्क सरकारी प्रकाशन के रूप में इसकी प्रतियां केन्द्रीय मंत्रालयों, संसद-सदस्यों, राज्य सरकारों, विश्वविद्यालयों, प्रमुख पुस्तकालयों, स्वैच्छिक हिंदी संस्थाओं, लेखकों, प्रकाशकों तथा हिंदी-प्रेमियों को वितरित की जाएंगी ।

6. पत्रक का संपादकीय कार्यालय 15। 16 नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, दिल्ली-6 में रहेगा ।

7. पत्रक के संबंध में पत्र-व्यवहार का पता :-

संपादक, 'हिन्दी समाचार जगत',
केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय,
15। 16, नेताजी सुभाष मार्ग,
दरियागंज, दिल्ली-6

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

078085

जय हिंदी : जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 1 हिंदी दिवस अंक 1

सितंबर, 1966

0 प्रारंभिक

0 भाषा-संगम

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

0 हिंदी --

x भारत सरकार में

x राजधानी में

x प्रादेशिक अंचल में

x विश्वविद्यालयों में

x विदेशों में

0 निवेदन

'हिंदी का क्षेत्रीय भाषाओं से कोई विरोध नहीं, हिंदी के साथ क्षेत्रीय भाषाओं की उन्नति के लिए भी प्रबंध होना चाहिए'।

(हिंदी सलाहकार समिति में गृह-मंत्री का वक्तव्य)

(केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, 15।16, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, दिल्ली-6 से प्रकाशित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 प्रारम्भिक

हिंदी को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार करने के बाद से केन्द्रीय सरकार के मंत्रालयों तथा विभागों और राज्य सरकारों ने हिन्दी में नेमी प्रशासनिक कार्य करने के लिए हिन्दी अनुभाग । विभाग स्थापित किए हैं । हिंदी के प्रचार, प्रसार, विकास तथा समृद्धि के लिए स्वैच्छिक हिंदी संस्थाओं, अन्य संस्थाओं, राज्य सरकारों तथा भारत सरकार ने अनेक कार्यक्रम आरम्भ किए हैं और सभी के प्रयत्न इस दिशा में लगातार चल रहे हैं ।

उद्देश्य

हिंदी के प्रचार, प्रसार और विकास के लिए देश-विदेश में किए जाने वाले सरकारी और गैर-सरकारी कार्यों, प्रयत्नों, कार्यक्रमों, गतिविधियों आदि का नियमित, समन्वित एवं आवधिक मूल्यांकन करने और समेकित सूचना प्रस्तुत करने की दृष्टि से शिक्षा मंत्रालय के निदेशानुसार केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने प्रस्तुत हिंदी मासिक समाचार पत्रक प्रकाशित करने का निश्चय किया है ।

विशेषताएं

(क) पत्रक का नाम `हिंदी समाचार जगत` होगा ।

(ख) यह हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि में प्रकाशित होगा ।

(ग) इसमें मुख्य रूप से भारत और विदेश में हिंदी के प्रचार, प्रसार, विकास और समृद्धि के लिए किए जाने वाले कार्यों से संबंधित समाचार और विवरण प्रति मास प्रकाशित किए जाएंगे ।

(घ) हिंदी के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं के प्रचार, प्रसार और प्रगति से संबंधित मुख्य समाचार भी प्रकाशित किए जाएंगे ।

संपादन और संपादन परामर्श मंडल

पत्रक के संपादन परामर्श मंडल के अध्यक्ष केन्द्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक रहेंगे । उपनिदेशक (प्रकाशन), संपादक (प्रकाशन) सदस्य होंगे और संपादक (हिंदी) सदस्य-सचिव रहेंगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुद्रण

(क) पत्रक प्रति माह प्रथम सप्ताह में प्रकाशित होगा ।

(ख) निःशुल्क सरकारी प्रकाशन के रूप में इसकी प्रतियाँ केन्द्रीय मंत्रालयों, राज्य सरकारों, विश्वविद्यालयों, पुस्तकालयों, विविध हिंदी संस्थाओं, लेखकों, प्रकाशकों तथा अन्य हिंदी प्रेमियों को वितरित की जाएंगी।

प्रकाशन

(क) पत्रक का प्रकाशन केन्द्रीय हिंदी निदेशालय (शिक्षा मंत्रालय) के निदेशक द्वारा किया जाएगा ।

(ख) इसका संपादकीय कार्यालय 15116 नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, दिल्ली-6 में रहेगा ।

हिंदी समाचार जगत का यह अंक

'हिंदी समाचार जगत' मासिक का प्रकाशन 'हिंदी दिवस' 14 सितम्बर, 1966 से आरंभ किया जा रहा है । हिंदी का कार्य अत्यन्त विस्तृत तथा विविध रूपात्मक है । देश भर में सरकारी और गैर-सरकारी सभी स्तर पर उसकी प्रगति, विकास एवं समृद्धि के लिए अनेक कार्य किए जा रहे हैं । हिंदी धीरे-धीरे हमारे कामकाज का माध्यम बनती जा रही है । विदेशों में भी उसका प्रचार-प्रसार हो रहा है । इस छोटे से पत्रक में इस सबको समेट पाना सहज नहीं है । हमारा प्रयत्न रहेगा कि पर्याप्त अनुभव के बाद और पत्रक की उपादेयता का ध्यान रखते हुए इसकी पृष्ठ संख्या बढ़ाई जाए ।

'हिंदी समाचार जगत' के विभिन्न स्तंभों के अन्तर्गत हिंदी के प्रचार, प्रसार और विकास आदि के व्यापक कार्य और बहुविध स्वरूप का संक्षिप्त रूपरेखात्मक परिचय तथा सामान्य झांकी प्रस्तुत की जा सके, यही हमारा प्रयत्न है ।

इसकी सफलता के लिए सभी का सहयोग अपेक्षित है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

–ए0 चन्द्रहासन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 भाषा-संगम

संस्कृत के विकास-प्रसार के लिए शिक्षा मंत्रालय की योजनाएं

संस्कृत की सर्वांगीण उन्नति से संबंधित विभिन्न समस्याओं के समाधान के उपाय सुझाने के लिए भारत सरकार ने सन् 1956 में डा0 सुनीति कुमार चाटुर्ज्या की अध्यक्षता में संस्कृत आयोग की नियुक्ति की थी। आयोग ने नवंबर 1957 में अपना जो प्रतिवेदन प्रस्तुत किया, केन्द्रीय सरकार के संस्कृत के विकास से संबद्ध कार्यक्रम प्राय: उसी की सिफारिशों की क्रियान्विति है। आयोग की सिफारिशों के अनुसार भारत सरकार ने अगस्त 1959 में श्री पतंजलि शास्त्री की अध्यक्षता में केन्द्रीय संस्कृत मंडल की स्थापना की। यह मंडल सरकार को संस्कृत के विकास-प्रसार के कार्यक्रमों के बारे में परामर्श देता है। मंडल के वर्तमान अध्यक्ष डा0 कर्ण सिंह, राज्यपाल, जम्मू-कश्मीर हैं।

दूसरी और तीसरी पंचवर्षीय योजनाओं में संस्कृत के विकास-प्रसार के लिए क्रमश: 10 लाख और 75 लाख रुपए की बजट-व्यवस्था की गई थी। चौथी योजना के लिए बजट में 2 करोड़ रुपए रखे गए हैं। शिक्षा मंत्रालय का संस्कृत से संबंधित संपूर्ण कार्यक्रम नीचे लिखी योजनाओं के अनुसार कार्यान्वित किया जाता है :-

1. संस्कृत की शिक्षा-संस्थाओं को वित्तीय सहायता देने की योजनाएं

(1) मंत्रालय संस्कृत की स्वैच्छिक शिक्षा संस्थाओं को अपने वर्तमान कार्यक्रम को जारी रखने और / या उसमें वृद्धि करने के लिए वित्तीय सहायता देता है। यह सहायता नई संस्था / पाठशाला खोलने, संस्कृत की कक्षाएं चलाने, संस्कृत प्रचारकों और अध्यापकों की नियुक्ति, संस्कृत वाचनालय या पुस्तकालय खोलने, पुरस्कार एवं वृत्तिकाएं देने, सामान खरीदने के लिए और भवन-निर्माण, पुस्तकों का प्रकाशन तथा अन्य ऐसी गतिविधियों के लिए दी जाती है जो संस्कृत के प्रसार में सहायक हों। यह सहायता संस्था-विशेष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अनुमोदित खर्च के 75 प्रतिशत के हिसाब से दी जाती है। तीसरी योजना में इस मद में 22 लाख रुपए खर्च हुए थे।

(2) मंत्रालय संस्कृत पाठशालाओं की पाठ्यचर्या में आधुनिक विषयों का समावेश करने के लिए राज्य सरकारों को शत-प्रतिशत सहायता देता है। फिलहाल प्रत्येक राज्य में केवल एक पाठशाला में ही इस योजना को लागू किया जा रहा है। तीसरी पंचवर्षीय योजना में इस पर 22 हजार रुपए खर्च हुए थे और चौथी योजना में इस कार्यक्रम के लिए 7 लाख रुपए की व्यवस्था है।

(3) मंत्रालय यह भी प्रयास कर रहा है कि जिन-जिन हाईस्कूलों या उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में संस्कृत की शिक्षा की व्यवस्था नहीं है वहां-वहां संस्कृत के अध्यापकों की नियुक्ति की जाए। इस योजना में फिलहाल प्रत्येक राज्य को अपने किन्हीं चार स्कूलों (संघ-राज्य-क्षेत्रों में दो स्कूलों) में संस्कृत के अध्यापक नियुक्त करने के लिए और पुस्तकें खरीदने के लिए शत-प्रतिशत सहायता दी जाती है। तीसरी पंचवर्षीय योजना में इस योजना पर लगभग एक लाख रुपए खर्च किए गए। चौथी योजना में इसके लिए 5 लाख रुपए की व्यवस्था की गई है।

(4) संस्कृत की परंपरागत शिक्षा और उसमें गुरुकुलों के योगदान को दृष्टि में रख कर तथा गुरुकुलों को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए सरकार ने गुरुकुलों के विकास के लिए एक अलग योजना बनाई है। इस योजना के अंतर्गत गुरुकुलों के ढंग पर काम करने वाली स्वैच्छिक संस्कृत शिक्षा-संस्थाओं को गुरुकुल के रूप में मान्यता दी जाती है और उन्हें उनके अनुमोदित खर्च का 75 प्रतिशत आर्थिक सहायता के रूप में दिया जाता है। यह सहायता ऊपर पैरा 1(1) में लिखित प्रयोजनों के लिए ही दी जाती है। तीसरी पंचवर्षीय योजना में इस पर 8 लाख रुपए खर्च हुए थे और चौथी योजना में इसके लिए 15 लाख रुपए की व्यवस्था की गई है।

---- क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएँ

अखिल भारतीय हिंदी संस्था संघ

अखिल भारतीय हिंदी संस्था संघ एक रजिस्टर्ड संस्था है जिसकी स्थापना 5 अगस्त, 1964 को नई दिल्ली में हुई। इसका कार्यक्षेत्र संपूर्ण भारत देश है। इसका वर्तमान पता है :- 4 | 61 वेस्टर्न एक्सटेंशन एरिया, करोल बाग, नई दिल्ली-5।

उद्देश्य

(1) संविधान की धारा 351 के अनुसार हिंदी के प्रचार और विकास के लिए राष्ट्रीय संघ की स्थापना।

(2) हिंदी के प्रचार तथा विकास के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए विभिन्न स्वैच्छिक हिंदी संस्थाओं के कार्यों में समन्वय स्थापित करना।

(3) विभिन्न स्वैच्छिक हिंदी संस्थाओं द्वारा संचालित परीक्षाओं के स्तर में एकरूपता स्थापित करना।

(4) भारत सरकार तथा राज्य सरकारों अथवा अन्य शिक्षा संस्थाओं द्वारा संघ को भेजे गए हिंदी के प्रचार और विकास से संबंधित किसी भी मामले पर सलाह और सहायता देना।

(5) ऐसे किसी भी अन्य कार्यकलाप को हाथ में लेना जो संघ की राय में हिंदी के प्रचार और कार्य में सहायक हो।

गठन

(1) सामान्य सभा : इसमें 51 सदस्य हैं जिनमें 15 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाओं के 30 प्रतिनिधि, 1 सहयोजित सदस्य, 2 केंद्र सरकार के प्रतिनिधि और 21 राज्य सरकारों के प्रतिनिधि हैं।

(2) कार्यकारिणी समिति :- इसमें 15 सदस्य संस्थाओं का एक-एक प्रतिनिधि है।

इनके अतिरिक्त (3) परीक्षा उप समिति तथा (4) हिंदी प्रचार तथा शिक्षण उप समिति है जिनमें 5-5 सदस्य हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्य

हिंदी प्रचार तथा शिक्षण उप समिति द्वारा दिए गए सुझावों के अनुसार संघ ने निम्नलिखित कार्य किए हैं :-

(1) अध्ययन-शिविर और संगोष्ठियां - - पश्चिमांचल की हिंदी संस्थाओं के कार्यकर्त्ताओं का अध्ययन-शिविर गुजरात विद्यापीठ के सहयोग से मार्च 1966 में और पूर्वांचल की हिंदी संस्थाओं के कार्यकर्त्ताओं का अध्ययन-शिविर असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के सहयोग से अप्रैल 1966 में किया गया ।

(2) प्रदर्शनी -- संघ की ओर से अहमदाबाद में अध्ययन-शिविर के अवसर पर संघ और भारत सरकार द्वारा किए जा रहे हिंदी कार्यों की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया ।

(3) स्वैच्छिक हिंदी संस्थाओं की निर्देशिका--संघ हिंदी संस्थाओं की एक निर्देशिका (डाइरेक्टरी) प्रकाशित करने का कार्य कर रहा है ।

परीक्षा उप समिति ने निम्नलिखित कार्य किए हैं :-

(1) विभिन्न परीक्षाओं के लिए आदर्श पाठ्यक्रम तैयार किया जा चुका है जो शीघ्र ही भारत सरकार को अनुमोदनार्थ प्रस्तुत किया जाएगा ।

(2) नई परीक्षाओं को मान्यता देने के लिए आधारभूत सिद्धांत निर्धारित किए गए हैं और तत्संबंधी नियम बनाए गए हैं ।

(3) 19 नई संस्थाओं से उनकी परीक्षाओं की मान्यता के लिए प्राप्त आवेदन-पत्रों पर विचार किया गया है ।

(4) इसके अतिरिक्त निरीक्षण के लिए उपयुक्त समझी गई संस्थाओं का निरीक्षण कर लिया गया है ।

आर्थिक सस्थिति

संघ की 15 सदस्य संस्थाएं हैं । इनमें से प्रत्येक से संघ को 500 रु0 वार्षिक चंदा प्राप्त होता है । भारत सरकार ने संघ को 1964-65 में 4000 रु0 और 1965-66 में 48,000 रु0 का अनुदान मंजूर किया है ।

--क्रमश:

=00=

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 हिंदी

x भारत सरकार में

- गृह मंत्रालय द्वारा केंद्रीय सरकार के कर्मचारियों का हिंदी प्रशिक्षण

राष्ट्रपति के तारीख 27 अप्रैल, 1960 के आदेश (पैरा 5, उपपैरा (क) के अन्तर्गत यह निदेश दिया गया था कि केंद्रीय सरकार के जो कर्मचारी (ता0 1-1-61 को) 45 वर्ष से कम आयु के हों उनके लिए सेवा-अवधि में हिंदी प्रशिक्षण अनिवार्य कर दिया जाए, इनमें तृतीय ग्रेड से नीचे के कर्मचारी, औद्योगिक प्रतिष्ठानों के कर्मचारी और निर्माण प्रभारित कर्मचारी शामिल नहीं हैं। उसी आदेश में यह भी कहा गया था कि निर्धारित तारीख तक हिंदी में विहित स्तर प्राप्त न करने पर भी कोई दंड नहीं दिया जाना चाहिए और कर्मचारियों को निःशुल्क प्रशिक्षण के लिए सुविधाएं लगातार दी जाती रहनी चाहिएं।

सन् 1960-61 से केंद्रीय सरकार के कर्मचारियों को हिंदी टाइपिंग और आशुलेखन के प्रशिक्षण की सुविधा भी दी जाती रही है।

2. हिंदी शिक्षण योजना की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं :-

(क) हिंदी प्रशिक्षण और परीक्षाओं के लिए कोई शुल्क नहीं है,

(ख) कक्षाएं कार्यालय के समय में ही चलाई जाती हैं और उस समय को ड्यूटी का समय माना जाता है,

(ग) जहां किसी प्रशिक्षार्थी को हिंदी कक्षाओं के लिए एक मील से अधिक जाना पड़ता है वहां उसे वाहन-खर्च दिया जाता है,

(घ) पाठ्य-पुस्तकें निःशुल्क दी जाती हैं,

(ङ) परीक्षा में बैठने के लिए यात्रा-भत्ता / वास्तविक वाहन खर्च दिया जाता है, और

(च) हिंदी में निपुणता प्राप्त करने और उचित समय में अन्तिम परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए प्रोत्साहन दिया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

3. हिंदी प्रशिक्षण की दृष्टि से केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों के चार वर्ग बनाए गए हैं :-

वर्ग 'क' - जिन अधिकारियों की मातृभाषा हिंदी है या जिनको हिंदी का आवश्यक ज्ञान है। उनको बाद में कार्यालयीन हिंदी शब्दावली और हिंदी में टिप्पण और आलेखन का प्रशिक्षण दिया जाएगा।

वर्ग 'ख' - जिन अधिकारियों की मातृभाषा निम्नलिखित भाषाओं में से कोई है :- पंजाबी, उर्दू, कश्मीरी, पश्तो या अन्य संबद्ध भाषाएं।

वर्ग 'ग' - जिन अधिकारियों की मातृभाषा निम्नलिखित भाषाओं में से कोई है :- मराठी, गुजराती, बंगला, उड़िया, असमिया, सिन्धी या अन्य संबद्ध भाषाएं।

वर्ग 'घ' - जिनकी मातृभाषा कोई दक्षिण भारतीय भाषा या अंग्रेजी है।

4. हिंदी शिक्षण योजना के पाठ्यक्रम और उनकी अवधि :-

(1) प्रबोध : 9 माह का प्रारंभिक पाठ्यक्रम।

(2) प्रवीण : 9 माह का माध्यमिक पाठ्यक्रम।

(3) प्राज्ञ : एक वर्ष का अंतिम और उच्चतम पाठ्यक्रम।

जिन अधिकारियों को टिप्पण और आलेखन का काम नहीं करना पड़ता उनको प्राज्ञ परीक्षा उत्तीर्ण करनी आवश्यक नहीं है।

5. सन् 1959-60 में इस योजना में शामिल कुल प्रशिक्षार्थियों की संख्या 16,000 थी, जो 1964-65 में बढ़कर 44,000 हो गई है। अभी तक तीन लाख केन्द्रीय सरकारी कर्मचारी एक या अधिक निर्धारित पाठ्यक्रम पूरा कर चुके हैं और लगभग 1.75 लाख कर्मचारी एक या अधिक निर्धारित परीक्षाएं उत्तीर्ण कर चुके हैं। कलकत्ता, बंबई, मद्रास, जबलपुर, गोरखपुर, दिल्ली और नई दिल्ली में इस समय हिंदी टाइपिंग और आशुलेखन के प्रशिक्षण की व्यवस्था है। अभी तक 5,943 प्रशिक्षार्थियों ने हिंदी टाइपिंग की और 895 ने हिंदी आशुलेखन की परीक्षाएं उत्तीर्ण कर ली हैं।

--क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहिंदी भाषी क्षेत्रों के दस हिंदी लेखकों को पुरस्कार

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित अहिंदी भाषी क्षेत्रों के हिंदी लेखकों की पहली प्रतियोगिता के परिणामों के आधार पर निम्नलिखित अहिंदी भाषी हिंदी लेखकों को कोष्ठक में दी गई उनकी रचनाओं के लिए पन्द्रह-पन्द्रह सौ रुपए के पुरस्कार देने का निर्णय किया गया है -

श्री मोहन राकेश (अंधेरे बंद कमरे), डा0 महीप सिंह (उजाले के उल्लू), कुमारी निर्मला देशपाण्डे (चिंगलिंग), श्री वी0 गोविन्द शेनोय (मिस्टिक साहब का कुत्ता), श्री सिद्धेश्वर हलधर (वह कौन), श्री डी0 पी0 पटनायक (मेघाक्रांत) श्री रमेश चौधरी आरिगपूडि (सांठगांठ), श्री चन्द्रकान्त कुसनूरकर (रेशम की गुड़िया), श्री बालशौरि रेड्डी (जिन्दगी की राह) और श्री केशवराव महागांवकर (धूपछांह)।

--- शिक्षा-मंत्रालय के भाषा प्रभाग में स्थानान्तर

श्री रामस्वरूप चिटकारा शिक्षा मंत्रालय में अभी तक उप शिक्षा सलाहकार (भाषा) के पद पर कार्य कर रहे थे। हिंदी का कार्य उनके अधीन था। विश्वविद्यालय प्रभाग में उनके स्थानांतर के फलस्वरूप उनका कार्यभार डा0 एस0 एम0 एस0 चारी, उप शिक्षा सलाहकार ने संभाला है। डा0 चारी सभी भारतीय भाषाओं के साथ-साथ हिंदी का काम भी देखेंगे।

(शेषांश कवर के तीसरे पृष्ठ पर)

--0-0-0--

"स्वराज्य यदि सबके लिए हो तो हिंदी ही
एक मात्र राष्ट्रभाषा बन सकती है।"

- महात्मा गांधी

"हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में
पिरोया जा सकता है।"

- स्वामी दयानन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

X राजधानी में

नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा राष्ट्रीय हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी

नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा 23 जुलाई से 28 जुलाई 1966 तक दरबार हाल चांदनी चौक, दिल्ली में `राष्ट्रीय हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी` आयोजित की गई। प्रदर्शनी का उद्घाटन दिल्ली के मुख्य आयुक्त श्री आदित्यनाथ झा ने किया। ट्रस्ट के अध्यक्ष डा0 बालकृष्ण केसकर ने प्रदर्शनी तथा नेशनल बुक ट्रस्ट के उद्देश्य और कार्यक्रम को स्पष्ट किया। इस प्रदर्शनी में पिछले दो वर्षों में प्रकाशित 3000 से अधिक पुस्तकें प्रदर्शित की गईं जिनमें प्रधानतः साहित्य, दर्शन, इतिहास, जीवन-चरित, विज्ञान और टेक्नोलोजी, कला; बाल-साहित्य आदि की पुस्तकें अलग-अलग सजाई गई थीं। यह प्रदर्शनी 7 से 12 सितम्बर तक भोपाल में और 19 से 23 सितम्बर तक जबलपुर में की जाएगी।

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का ग्यारहवां अधिवेशन

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का ग्यारहवां वार्षिक अधिवेशन नई दिल्ली में 16-17 जुलाई, 1966 को संपन्न हुआ। अध्यक्ष श्री राम लाल पुरी ने इस बात पर जोर दिया कि पुस्तक व्यवसाय को राष्ट्रीय उद्योग के रूप में विकसित किया जाए। उन्होंने बताया कि नार्वे में एक लाख व्यक्तियों के पीछे 57 पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, स्वीडन में 70, डेनमार्क में 69, ब्रिटेन में 45 परन्तु भारत में 25 लाख व्यक्तियों के पीछे एक पुस्तक प्रकाशित होती है

दिल्ली नगर निगम में 26 जनवरी से हिन्दी

दिल्ली नगर निगम की हिन्दी समिति ने सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पास किया है कि 26 जनवरी, 1967 से सब काम हिंदी में किया जाएगा।

भारतीय भाषाओं के लिए समान लिपि

योजना आयोग के सदस्य डा0 वी0 के0 आर0 वी0 राव ने शिक्षा व मानवीय साधनों का विकास` नामक पुस्तक का विमोचन करते समय सुझाया कि देश में भावात्मक एकता के लिए नागरी लिपि को अपना लेना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी कवियों को पुरस्कार

आकाशवाणी की देशभक्तिपूर्ण कविताओं की प्रतियोगिता में श्रीमती सरोजिनी सिन्हा, श्रीमती पुष्पा अवस्थी, श्री चन्द्रदेव सिंह और श्री अमर बहादुर सिंह को पुरस्कृत किया गया ।

हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा `हिंदी व्यवहार वर्ष` का आरंभ

हिंदी साहित्य सम्मेलन की ओर से 15 अगस्त 1966 से `हिंदी व्यवहार वर्ष` आरम्भ किया गया । इस अवसर पर सम्मेलन के अध्यक्ष सेठ गोविन्ददास ने इस बात का आग्रह किया कि नागरिकों को दैनिक जीवन में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिए ।

-.-.-.

0 हिंदी शिक्षा समिति

हिंदी से संबंधित विशिष्ट विषयों पर भारत सरकार को सलाह देने के लिए अक्तूबर 1951 में हिंदी शिक्षा समिति की स्थापना की गई थी । विभिन्न स्तरों पर हिंदी शिक्षा का स्वरूप-निर्धारण और हिंदी परीक्षाओं के पाठ्यक्रमों का समन्वय और मानकीकरण, हिंदी अध्यापकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था, स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं की परीक्षाओं को मान्यता आदि विषयों पर यह समिति भारत सरकार को समय-समय पर सलाह देती है ।

शिक्षा मंत्री समिति के अध्यक्ष और उप-शिक्षा मंत्री उपाध्यक्ष हैं । राज्य सरकारों और संघ-क्षेत्रों का एक-एक प्रतिनिधि, लोकसभा-अध्यक्ष द्वारा नामित चार लोकसभा-सदस्य, राज्यसभा-अध्यक्ष द्वारा नामित दो राज्यसभा-सदस्य, सरकार द्वारा नामित प्रमुख स्वैच्छिक हिंदी संस्थाओं के पांच प्रतिनिधि, सरकार द्वारा नामित प्रख्यात हिंदी प्रचारक, शिक्षा मंत्रालय के सं0 शिक्षा सलाहकार (भाषा), वै0 तथा त0 शब्दावली आयोग के अध्यक्ष, के0 हिंदी निदेशालय के निदेशक, गृह मंत्रालय का एक प्रतिनिधि और के0 हिंदी शिक्षण-मंडल, आगरा के अध्यक्ष इस समिति के सदस्य हैं और शिक्षा मंत्रालय के उप शिक्षा सलाहकार (भाषा) इसके सचिव हैं । समिति की 18 बैठकें हो चुकी हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

x प्रादेशिक अंचल में

आन्ध्र प्रदेश

हिंदी पंडितों की नियुक्ति

राज्य सरकार ने राज्य के सभी गैर-सरकारी हाई स्कूलों में हिंदी पंडितों की नियुक्ति करने की स्वीकृति दे दी है । इससे प्रति वर्ष 20 85643 रुपए का खर्च बढ़ जाएगा । इस योजना को केन्द्र सरकार की ओर से शत-प्रतिशत सहायता मिलेगी ।

उत्तर प्रदेश

अहिन्दी भाषी राज्यों के हिंदी शिक्षकों का पुनश्चर्या पाठ्यक्रम

अल्मोड़ा में देश के अहिंदी भाषी राज्यों के हिंदी शिक्षकों के लिए केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा द्वारा आयोजित एक मास के पुनश्चर्या पाठ्यक्रम का समापन-समारोह केंद्रीय उप शिक्षा मंत्री श्री भक्त दर्शन ने किया । इस अवसर पर उन्होंने कहा कि हिंदी ही हमारे देश को एकता के सूत्र में बांध कर उसे शक्तिशाली बना सकती है ।

हिंदी भवन वार्षिक समारोह और उत्तरप्रदेश राजभाषा सम्मेलन

मेरठ में पुरुषोत्तम दास टंडन हिंदी भवन का वार्षिक समारोह और उत्तरप्रदेश राजभाषा सम्मेलन संपन्न हुआ । इस अवसर पर केंद्रीय उप शिक्षा मंत्री श्री भक्त दर्शन ने राजर्षि टंडन की हिंदी सेवाओं का उल्लेख करते हुए उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की । उन्होंने बताया कि अहिंदी भाषी राज्यों में हिंदी बराबर बढ़ रही है ।

हिंदी समिति का महत्वपूर्ण कार्य

देश की राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी की प्रतिष्ठा के पश्चात हिंदी वाङ्मय के सभी अंगों पर प्रामाणिक ग्रंथों का प्रणयन करने के उद्देश्य से उत्तर प्रदेश शासन द्वारा हिन्दी समिति का गठन किया गया जो पिछले 11 वर्षों से यह कार्य कर रही है और अब तक 180 ग्रन्थों का प्रकाशन कर चुकी है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्यप्रदेश

न्यायालयों में हिंदी में कामकाज

मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश ने आदेश दिया है कि द्वितीय श्रेणी के जजों और प्रथम श्रेणी के मजिस्ट्रेटों को भविष्य में फैसले हिन्दी में लिखने चाहिए।

इंजीनियरिंग डिप्लोमा पाठ्यक्रम हिंदी में

राज्य के शिक्षा मंत्री ने घोषणा की है कि इस सत्र से राज्य के सभी पोलिटेकनिकों में इंजीनियरिंग डिप्लोमा पाठ्यक्रम का माध्यम हिंदी रहेगा।

राजस्थान

न्यायालयों में हिंदी में कामकाज

राज्य में उच्च न्यायालय के अधीनस्थ न्यायालयों में 90 प्रतिशत कार्य हिंदी में होने लगा है। न्याय पंचायतों का काम हिंदी में ही होता है।

राजकीय कामकाज में हिन्दी

राज्य सरकार ने राजकीय कामकाज को हिन्दी में करने के आदेश दे दिए हैं और इसके लिए कार्यक्रम निर्धारित किए हैं।

रेलवे के कर्मचारियों को हिन्दी के लिए पुरस्कार

कोटा के पश्चिम रेलवे मंडल कार्यालय के हिंदी प्राज्ञ और प्रवीण परीक्षाओं में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण 16 कर्मचारियों को पुरस्कार दिए गए।

जयपुर में राष्ट्रीय हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी

जयपुर में नेशनल बुक ट्रस्ट ने राष्ट्रीय हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी की। इसका उद्घाटन करते समय राजस्थान के शिक्षा मंत्री ने बताया कि राजस्थान तीन वर्षों के अन्दर शत-प्रतिशत हिंदी का व्यवहार करने लगेगा।

-.-.-.-.

" मैं दुनियां की सब भाषाओं की इज़्ज़त करता हूं, परन्तु मेरे देश में हिंदी की इज़्ज़त न हो, यह मैं नहीं सह सकता "।

-विनोबा भावे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

X विश्वविद्यालयों में

मध्यप्रदेश में विश्वविद्यालय स्तर तक शिक्षा का माध्यम हिंदी

भोपाल में मध्य प्रदेश के विश्वविद्यालयों के उपकुलपतियों की दो दिन की बैठक हुई। उसमें विश्वविद्यालय स्तर तक शिक्षा का माध्यम हिंदी रखने और उच्च कक्षाओं के लिए पाठ्य पुस्तकें हिंदी में तैयार करने का निश्चय किया गया।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में हिन्दी समिति की स्थापना

'हिंदी व्यवहार वर्ष' अभियान के अंतर्गत कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष आचार्य विनय मोहन शर्मा की अध्यक्षता में हिंदी समिति की स्थापना की गई है जो नागरिकों से हिंदी को व्यवहार में लाने के लिए कहेगी।

दिल्ली विश्वविद्यालय में श्री मैथिलीशरण गुप्त भाषण माला

दिल्ली विश्वविद्यालय के तत्वावधान में उपकुलपति डा० देशमुख की अध्यक्षता में स्व० मैथिलीशरण गुप्त के जन्म दिवस पर भाषणमाला का आयोजन किया गया जिसमें श्रीमती महादेवी वर्मा ने अपने भाषणों में गुप्त जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे हर क्लांत व श्रांत को अपनाने वाले वटवृक्ष थे।

-, -, -,

X विदेशों में

भारतीय दूतावासों द्वारा हिंदी में उत्तर

संसद में विदेश मंत्री ने बताया कि बुडापेस्ट, हनोई, कंधार, काठमांडू, मास्को, प्राग और सैनफ्रांसिस्को स्थित भारतीय दूतावासों ने हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में देना आरंभ कर दिया है और गंगटोक, हेग, कराची, काठमांडू, लंदन, मारिशस, मास्को, न्यूयार्क, पैकिंग, तोक्यो, ट्रिनिडाड आदि स्थानों में स्थित भारतीय दूतावासों में हिंदी टाइपराइटरों की व्यवस्था की गई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निवेदन

'हिंदी समाचार जगत' मासिक पत्रक का पहला अंक आपके सामने है।

हिंदी के प्रचार, प्रसार, विकास तथा समृद्धि के लिए वर्षों से प्रयत्न चल रहे हैं। स्वतंत्रता के बाद इस कार्य में और भी गति आई है। भारत सरकार, राज्य सरकारें, स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं, विश्वविद्यालय, पुस्तकालय, हिंदी पत्र-पत्रिकाएं, हिंदी शोध-संस्थाएं, हिन्दी के प्रकाशक, लेखक इस दिशा में प्रयत्नशील हैं और उनके बहुविध प्रयत्नों एवं कार्यों के फलस्वरूप ही हिंदी राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा के गुरुतर उत्तरदायित्व को निभाने में सफल हो सकेगी।

'हिंदी समाचार जगत' इन प्रयत्नों तथा कार्यों को समन्वित रूप में प्रस्तुत करने के उद्देश्य से प्रकाशित किया जा रहा है। इसके लिए सभी का सहयोग अपेक्षित है।

इसलिए भारत सरकार के सभी मंत्रालयों, विभागों, संबद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों, स्वायत्त निकायों, स्वैच्छिक हिंदी संस्थाओं, विश्वविद्यालयों, हिन्दी शोध-संस्थाओं हिंदी पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकालयों, हिंदी प्रकाशकों आदि से यह अनुरोध है कि वे अपने यहां से अभी तक हुए हिंदी संबंधी कार्य का समेकित विवरण भेजने की कृपा करें और साथ ही वर्तमान तथा भावी कार्यक्रमों। योजनाओं की रूपरेखा भी भेजें।

यह भी अनुरोध है कि प्रति मास 'हिंदी समाचार जगत' में प्रकाशित की जा सकने योग्य उल्लेखनीय सूचना। विवरण संपादक 'हिंदी समाचार जगत' को नियमित रूप से भेजने की व्यवस्था करें।

----डॉ० चन्द्रहासन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पृष्ठ 12 का शेषांश)

हिंदी सलाहकार समिति

गृह मंत्रालय के दिनांक 24-6-64 के संकल्प के अनुसार, भारत सरकार ने हिंदी के प्रसार एवं क्रमिक विकास और संघ के सरकारी कामों में हिंदी के क्रमिक प्रयोग के संबंध में सलाह देने के लिए मुख्यत: गैर-सरकारी सदस्यों की एक समिति बनाने का निर्णय किया था।

इस 'हिंदी सलाहकार समिति' के सदस्यों की संख्या 43 है। गृह मंत्री इसके अध्यक्ष हैं और केन्द्रीय शिक्षा मंत्री, विधि मंत्री तथा भारत सरकार के हिंदी सलाहकार श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' उपाध्यक्ष हैं।

समिति का मुख्यालय नई दिल्ली में है।

समिति के विषय में विस्तृत जानकारी आगामी अंक में दी जाएगी।

वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग

राष्ट्रपति के तारीख 27 अप्रैल 1960 के आदेश के अनुसार निम्नलिखित कार्यों के लिए अक्तूबर 1961 में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना की गई:

वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली निर्माण के क्षेत्र में अब तक किए गए कार्य की समीक्षा और समन्वय; राज्यों में स्थित विभिन्न संस्थाओं द्वारा वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के क्षेत्र में किए गए कार्य का, संबंधित राज्य सरकार की सहमति से या उसके कहने पर, समन्वय; विभिन्न सूत्रों से प्राप्त हिंदी और भारतीय भाषाओं की शब्दावलियों का अनुमोदन और वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्द-कोशों का निर्माण एवं विदेशी भाषाओं की वैज्ञानिक पुस्तकों का भारतीय भाषाओं में अनुवाद।

इस समय आयोग के आठ सदस्य हैं। डा० निहालकरण सेठी अध्यक्ष और डा० विश्वनाथ प्रसाद उपाध्यक्ष हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

-, -, -, -,

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निदेशालय के प्रकाशन

मानक-ग्रंथ

1. सम-स्थानिकों के संसार में (In the World of Isotopes) लेखक : वी० मेजेन्त्सेफ अनु० जगदीश चंद्र सोनी पृष्ठ संख्या : 98 मूल्य : 2.90
2. अर्धचालक और उनके उपयोग (Semi-Conductors and their use) लेखक : ए० एफ० योफी अनु० उदितकुमार शर्मा पृष्ठ संख्या: 125 मूल्य: 3.75
3. शुद्धघन ज्यामिति प्रवेशिका (An Introduction to pure solid Geometry) ले० गणेश सखाराम महाजनि अनु०हरीश्वरप्रसाद सिन्हा पृष्ठ संख्या 102 मूल्य 4.15
4. अश्रव्य ध्वनियां (Sounds we cannot hear) ले० : वी० कुद्रयांवत्सेव अनु० श्री पुरुषोत्तमलाल जैन पृष्ठ संख्या : 127 मूल्य : 3.10
5. कार्बोहाइड्रेट और ग्लाइकोसाइड ले०डा० फूलदेव सहाय वर्मा पृष्ठ :183 मूल्य:4.85
6. भारतीय परंपरा (Indian Heritage) ले० : प्रो० हुमायून् कबिर अनु० : महेंद्र चतुर्वेदी पृष्ठ सं० : 122 मूल्य : 2.50
7. अंतर्राष्ट्रीय संबंध ले० महेशप्रसाद टण्डन पृष्ठ सं० : 284 मूल्य : 8.80
8. भारत की वित्तीय शासन व्यवस्था ले० हरिगोपाल परांजपे पृष्ठ सं०:268 मूल्य:8.50
9. समीकरण सिद्धांत ले० डा० श्रीराम सिन्हा पृष्ठ सं० : 100 मूल्य : 5.35
10. माताओं और शिशुओं के रोगों की रोकथाम ले० : ओ० मकेयेवा अनु० दिनेशचंद्र शर्मा पृष्ठ सं० : 198 मूल्य : 4.00
11. उल्काएँ (Meteors) ले०वी० फेडिंस्की अनु०पवनकुमार जैन पृष्ठ:122 मूल्य:2.60
12. रहस्यमय विश्व (The Mysterious Universe) ले० : जेम्स जीन्स अनु० : श्रीमती अनन्तलक्ष्मी अम्माल पृष्ठ संख्या : 110 मूल्य : 2.80
13. प्रकाश तरंगें और उनके उपयोग (Light Waves and Their Uses) ले० ए० ए० माइकेलसन अनु० ओम प्रकाश वर्मा पृष्ठ सं० : 146 मूल्य: 4.90
14. भाषा, सत्य और तर्क-शास्त्र (Language, Truth and Logic) ले० जे० ए० अय्यर अनु० : भूपेंद्रनाथ सान्याल पृष्ठ सं० : 148 मूल्य : 2.95
15. अपना हृदय सबल बनाइए (Strengthen Your Heart) ले० वी० जेलेनिन पृष्ठ:142

कोश साहित्य

1. पारिभाषिक शब्द-संग्रह (अंग्रेजी-हिंदी) (Consolidated Glossary of Technical Terms) पृष्ठ संख्या : 1370 मूल्य : 12.00
2. शब्दार्थ मीमांसा ले० रामचंद्र वर्मा पृष्ठ सं० : 362 मूल्य : 11.50

भाषा पत्रिका

अब तक 19 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। एक अंक का मूल्य 1.25

भाषा के विशेषांक

1. शांति-रक्षा अंक पृष्ठ संख्या : 148 मूल्य : 4.50
2. द्विवेदी स्मृति विशेषांक पृष्ठ संख्या : 270 मूल्य : 12.50

निदेशालय के सभी प्रकाशन अग्रिम धन भेजकर **प्रबन्धक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल्ली-8 और 31, थिएटर कम्युनिकेशन्स बिल्डिंग कनॉट प्लेस, नई दिल्ली** से खरीदे जा सकते हैं।

प्रो० ए० चंद्रहासन, निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित। संपादक: परशुराम शर्मा

महा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, मिन्टो रोड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

4-12-66

हिंदी समाचार जगत

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा-मंत्रालय

भारत सरकार

जय हिंदी, जय नागरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी समाचार जात

8 अक्तूबर, 1966. रजिस्ट्रेशन संख्या

उद्देश्य

1. देश और विदेश में हिंदी के प्रचार, प्रसार, विकास तथा समृद्धि के लिए सरकारी और गैर-सरकारी माध्यम से किए जाने वाले प्रयत्नों का आकलन और प्रकाशन ।

2. हिंदी के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार और प्रगति से संबंधित समाचारों का संकलन और प्रकाशन ।

नियम

1. पत्रक प्रति मास प्रथम सप्ताह में प्रकाशित होगा ।
2. पत्रक की भाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी ।
3. केन्द्रीय हिंदी निदेशालय (शिक्षा मंत्रालय) के निदेशक पत्रक के संपादन-परामर्श-मंडल के अध्यक्ष होंगे; उप निदेशक (प्रकाशन) और संपादक (प्रकाशन) सदस्य होंगे तथा संपादक (हिंदी) सदस्य-सचिव होंगे ।
4. पत्रक का प्रकाशन केंद्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक द्वारा किया जाएगा ।
5. निःशुल्क सरकारी प्रकाशन के रूप में इसकी प्रतियां केंद्रीय मंत्रालयों, संसद-सदस्यों, राज्य सरकारों, विश्वविद्यालयों, प्रमुख पुस्तकालयों, स्वैच्छिक हिंदी संस्थाओं, लेखकों, प्रकाशकों तथा हिंदी-प्रेमियों को वितरित की जाएंगी ।
6. पत्रक का संपादकीय कार्यालय 15। 16, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज दिल्ली-6 में रहेगा ।
7. पत्रक के संबंध में पत्र-व्यवहार का पता :-

संपादक, 'हिंदी समाचार जात',
केन्द्रीय हिंदी निदेशालय,
15। 16, नेताजी सुभाष मार्ग,
दरियागंज, दिल्ली-6.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जय हिंदी : जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 1 अंक 2

अक्तूबर 1966

- 0 देश की एकता के लिए हिंदी
- 0 भाषा-संगम
- 0 हिंदी - -
  - X भारत सरकार में
  - X राजधानी में
  - X प्रादेशिक अंचल में
  - X विश्वविद्यालयों में
  - X विदेशों में

पाठकों से - - -

इस पत्रिका के प्रथम अंक पर हमें अनेक पाठकों ने सुझाव, सम्मतियां और बधाइयां भेजी हैं। हम उनके आभारी हैं। उन सुझावों पर विचार हो रहा है। भविष्य में हमें उनसे ऐसे ही सहयोग की कामना और आशा है।

- - - संपादक

(केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, 15/16, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, दिल्ली-6 से प्रकाशित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश की एकता को मजबूत करने के लिए हिंदी जरूरी

एर्नाकुलम में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की केरल शाखा द्वारा आयोजित हिंदी प्रचारकों की एक दिन की गोष्ठी का उद्घाटन करते हुए प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने हिंदी में भाषण दिया । उन्होंने कहा कि देश में एकता को मजबूत बनाने के लिए एक आम संपर्क भाषा का होना अनिवार्य है और यह आम भाषा हिंदी होनी चाहिए ।

हिंदी के स्वरूप के बारे में उन्होंने सुझाव दिया कि हिंदी सरल और देश के सभी लोगों को आसानी से समझ में आने वाली होनी चाहिए । विभिन्न राज्यों के बीच संचार भाषा के रूप में हिंदी में प्रांतीय भाषाओं के शब्द भी शामिल होने चाहिए ।

उन्होंने कहा कि पाठ्यक्रम में सबसे पहिला स्थान मातृभाषा (क्षेत्रीय भाषा) को, दूसरा स्थान हिंदी (राष्ट्रभाषा) को और तीसरा स्थान अंग्रेजी (अंतर्राष्ट्रीय भाषा तथा विज्ञान की भाषा) को मिलना चाहिए ।

श्रीमती गांधी ने केरल की महिलाओं को हिंदी सीखने में उनकी रुचि के लिए बधाई दी । उन्होंने कहा कि मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि केरल हिंदी प्रचार सभा हिंदी के प्रचार के लिए अच्छा काम कर रही है ।

श्रीमती गांधी दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की अध्यक्ष चुनी गई। उन्होंने कार्यकारिणी की पहली बैठक की अध्यक्षता करते हुए सदस्यों से कहा कि दक्षिण में काफी लोग हिंदी सीख रहे हैं ।

-- 0 --

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 [illegible]

संस्कृत के विकास-प्रचार के लिए शिक्षा मंत्रालय की योजनाएं

(गतांक से आगे)

2- छात्रवृत्ति योजनाएं

(1) हाई स्कूलों और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के संस्कृत पढ़ने वाले छात्रों के लिए शिक्षा मंत्रालय दस रुपए प्रति मास के हिसाब से प्रति माह 1000 छात्रवृत्तियां देता है। ये छात्रवृत्तियां राज्य सरकारों की मार्फत दी जा जाती हैं। तीसरी पंचवर्षीय योजना में इस कार्यक्रम की अनुमोदित व्यय-राशि और वस्तुत: व्यय की गई राशि क्रमश: 7-50 लाख और 6 लाख रुपए थी। चौथी योजना में इस पर 15 लाख रुपए (प्रति वर्ष 3 लाख रुपए) खर्च करने का विचार है। यह योजना शत-प्रतिशत केन्द्रीय आधार पर होगी।

(2) संस्कृत पाठशालाओं की आचार्य या समकक्ष परीक्षा में उत्तीर्ण उन छात्रों को जो अनुसंधान करना चाहते हैं मंत्रालय 200 रुपए मासिक की अनुसंधान-वृत्ति देता है। इसके लिए छात्रों का चयन प्रतिवर्ष किया जाता है। अनुसंधान की सामान्य अवधि दो वर्ष है। इस वर्ष केन्द्रीय संस्कृत मण्डल से परामर्श करके अनुसंधानकर्ताओं का चुनाव किया जा चुका है। तीसरी पंचवर्षीय योजना में इस मद 3 लाख रुपए खर्च किए गए थे।

(3) उक्त दो योजनाओं के अतिरिक्त "मैट्रिक के बाद संस्कृत पढ़ने वाले छात्रों के लिए छात्रवृत्ति" और "संस्कृत पाठशालाओं के छात्रों के लिए छात्रवृत्ति" नामक दो योजनाएं शिक्षा मंत्रालय के विचाराधीन हैं। पहली योजना के लिए चौथी पंचवर्षीय योजना में 10 लाख रुपए की व्यवस्था की गई है और दूसरी योजना तथा ऊपर पैरा (2) में उल्लिखित योजना के लिए चौथी पंचवर्षीय योजना में सम्मिलित रूप से 15 लाख रुपए का विनियान किया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

3- संस्कृत की परीक्षाओं और उपाधियों का मानकीकरण

मंत्रालय ने देश भर की विभिन्न संस्कृत शिक्षा संस्थाओं द्वारा ली जाने वाली परीक्षाओं के स्तरों और उन संस्थाओं द्वारा दी जाने वाली उपाधियों की समकक्षता निर्धारित करने का भी प्रयास किया है । अब तक लगभग 24 शिक्षा-संस्थाओं द्वारा ली जाने वाली परीक्षाओं की समकक्षता निर्धारित कर दी गई है, उनकी उपाधियों को मान्यता दे दी गई है तथा राज्य सरकारों से यह सिफारिश की गई है कि परंपरागत उपाधिधारी तथा आधुनिक डिग्रीधारी शिक्षकों के वेतन आदि के संबंध में किसी तरह की विषमता न रहे ।

4- केन्द्रीय संस्कृत संस्थाएं

केन्द्रीय सरकार से शत-प्रतिशत सहायता पाने वाले केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ (तिरुपति) की स्थापना 1962 में केन्द्रीय संस्कृत-मंडल की सिफारिश पर की गई थी । विद्यापीठ के कार्यों में उच्च संस्कृत-शिक्षा, संस्कृत के विशिष्ट क्षेत्रों में अनुसंधान और संस्कृत शिक्षकों को प्रशिक्षण देना आदि शामिल है । यह स्वायत्त संस्था के रूप में रजिस्टर्ड है । तीसरी पंचवर्षीय योजना में विद्यापीठ को 6.54 लाख रुपए दिए गए थे । विद्यापीठ प्रशिक्षणार्थियों को 'शिक्षा-शास्त्री' की उपाधि प्रदान करता है जिसे बी०एड० के समकक्ष मान्यता प्राप्त है । चौथी योजना में विद्यापीठ के कार्यों का विस्तार किया जाएगा और उस पर 15 लाख रुपए खर्च होंगे ।

-कृपया:

- - -

बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्

बिहार राष्ट्रभाषा परिषद का 5 अक्तूबर, 1966 से दो दिन का वार्षिक समारोह प्रो० ए० चन्द्रहासन, निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की अध्यक्षता में संपन्न होगा । प्रख्यात संस्कृत लेखक और विद्वान श्री रंगनाथ पाठक को उनके हिन्दी ग्रंथ 'षड्दर्शन' के लिए एक विशेष पुरस्कार भी प्रदान किया जाएगा ।

- - -

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 हिंदी

X भारत सरकार में

- गृह मंत्रालय द्वारा केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों का हिंदी प्रशिक्षण

(गतांक से आगे)

6- प्रशासनिक कर्मचारियों को हिंदी प्रशिक्षण देने में अब तक हुई प्रगति के पुनरवलोकन से ज्ञात हुआ है कि अभी 2·7 लाख कर्मचारियों को प्रशिक्षण देना शेष है । इसके लिए ये प्रयत्न किए जाएंगे :- (1) जिन कर्मचारियों को यह प्रशिक्षण दिया जाना है उनमें से 20 प्रतिशत हर वर्ष कक्षाओं में प्रशिक्षण के लिए बराबर भेजे जाएं; (2) इस प्रकार भेजे गए कर्मचारी हिंदी कक्षाओं में अवश्य ही उपस्थित रहें; (3) इन कक्षाओं में नियमित रूप से उपस्थित न होने पर वैसा ही दंड - विधान किया जाए जैसा पर्याप्त कारण न होते हुए काम से अनुपस्थित रहने पर किया जाता है । यह प्रयत्न भी किया जाए कि वरिष्ठ अधिकारी अपने नीचे के कर्मचारियों को कक्षाओं में जाने से न रोकें; (4) प्रशासनिक कर्मचारियों के लिए जिस तरह प्रशिक्षण अनिवार्य है उसी तरह इन परीक्षाओं में बैठना भी अनिवार्य है ।

इन निर्णयों को कार्यान्वित करने के लिए सभी संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों को आवश्यक अनुदेश देने का अनुरोध सभी मंत्रालयों से किया गया है ।

7- अप्रैल, 1964 में यह निश्चय किया गया था कि गृह मंत्रालय की हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत जून, 1964 से अंतिम हिंदी परीक्षा (प्राज्ञ) या हिंदी टाइपिंग या हिंदी आशुलेखन की परीक्षाएं उत्तीर्ण करने वाले अहिन्दी भाषी अराजपत्रित केन्द्रीय सरकारी कर्मचारियों को प्रोत्साहन के रूप में व्यक्तिक वेतन दिया जाए जो उनकी एक वेतन-वृद्धि के बराबर होगा । यह वेतन-वृद्धि भावी वेतन-वृद्धियों में मिला दी जाएगी ।

8- जो राजपत्रित और अराजपत्रित अहिन्दी भाषी कर्मचारी प्रवीण, प्राज्ञ और हिंदी टाइपिंग तथा हिंदी आशुलेखन की परीक्षाओं में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होते हैं उन्हें नकद पुरस्कार देने की योजना जून, 1964 में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार तय की गई थी :- हिंदी प्रवीण या प्राज्ञ परीक्षा में (1) 70 प्रतिशत या अधिक अंक प्राप्त करने वाले प्रशिक्षार्थियों को 300 रुपए का पहला पुरस्कार, (2) 60 प्रतिशत से 69 प्रतिशत तक अंक प्राप्त करने वालों को 200 रुपए का दूसरा पुरस्कार, (3) 55 प्रतिशत से 59 प्रतिशत तक अंक प्राप्त करने वालों को 100 रुपए का तीसरा पुरस्कार ।

8- विशेषत: रक्षा, रेलवे और संचार मंत्रालयों में काम करने वाले संकार्य अमले (आपरेशनल स्टाफ़) के कार्य का प्राय: अलग-अलग समय होता है । ऐसे अमले को कार्यालय के समय में हिंदी कक्षाओं में पढ़ने के लिए भेजा नहीं जा सकता । अत: यदि वे अपने प्रयत्नों से ही निर्धारित हिंदी परीक्षाएं उत्तीर्ण कर लें तो उन्हें इस योजना के अंतर्गत मिलने वाले प्रोत्साहन के अतिरिक्त, निम्नलिखित प्रोत्साहन भी दिया जाएगा :- (1) प्रबोध - 75 रुपए, (2) प्रवीण - 75 रुपए, (3) प्राज्ञ - 100 रुपए । ये आदेश सितंबर 1965 से लागू कर दिए गए हैं ।

9- कार्य-कुशलता के लिए हिंदी अध्यापकों को प्रोत्साहन देने का भी निश्चय किया गया है । योजनान्तर्गत चार क्षेत्रों में से प्रत्येक में नकद पुरस्कारों की संख्या और राशि निम्नलिखित होगी :-

		संख्या	राशि
1-	पहला पुरस्कार	1	300 रुपए
2-	दूसरा पुरस्कार	2	200 रुपए, प्रत्येक को
3-	तीसरा पुरस्कार	3	100 रुपए, प्रत्येक को

हिंदी अध्यापकों को नकद पुरस्कार इस आधार पर दिए जाते हैं - (1) प्रशिक्षार्थियों का उच्चतम उत्तीर्णता-प्रतिशत; (2) पुरस्कार प्राप्त करने वाले प्रशिक्षार्थियों की संख्या; (3) प्रशिक्षार्थियों की प्रवेश-संख्या; (4) सबसे अधिक उपस्थिति ।

(समाप्त)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- शिक्षा मंत्रालय की हिंदी के प्रचार और विकास की योजनाएं

हिंदी के प्रचार और प्रसार की ये योजनाएं शिक्षा मंत्रालय स्वयं कार्यान्वित कर रहा है.-(1) हिंदी शिक्षकों की नियुक्ति, (2) अहिंदी-भाषी राज्यों में हिंदी शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालयों की स्थापना, (3) स्वैच्छिक संस्थाओं को वित्तीय सहायता, (4) केंद्रीय हिंदी-शिक्षण मण्डल, आगरा।

हिंदी के प्रचार-प्रसार और विकास से संबंधित अन्य योजनाएं मंत्रालय के अधीन कार्यालयों-केंद्रीय हिंदी निदेशालय और वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग-द्वारा कार्यान्वित की जाती हैं। इनका विवरण अगले अंकों में दिया जाएगा।

उपर्युक्त चारों योजनाओं का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है--

1- हिंदी शिक्षकों की नियुक्ति- इस योजना के अंतर्गत अहिंदी भाषी राज्य सरकारों को अपने यहां के विद्यालयों में हिंदी शिक्षक नियुक्त करने के लिए आर्थिक सहायता दी जाती है। 1962-63 से पहले यह सहायता उच्च या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में एक हिंदी अध्यापक नियुक्त करने के लिए . दी जाती थी। 1962-63 से प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों को भी इस योजना में शामिल कर लिया गया है। 1962-63 से भारत सरकार हिंदी शिक्षकों की नियुक्ति पर होनेवाला शत-प्रतिशत खर्च स्वयं वहन करती है।

2- अहिंदी-भाषी राज्यों में हिंदी शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालयों की स्थापना :- यह योजना द्वितीय पंचवर्षीय योजना-काल के मध्य में प्रारंभ की गई थी। इस योजना के अंतर्गत अहिंदी भाषी राज्य-सरकारों को अपने यहां नए प्रशिक्षण महाविद्यालय (ट्रेनिंग कालेज) खोलने या पुराने प्रशिक्षण महाविद्यालयों में हिंदी शिक्षकों के प्रशिक्षण की सुविधाएं बढ़ाने के लिए शत-प्रतिशत सहायता दी जाती है। तीसरी पंचवर्षीय योजना के अंत तक इस योजना के अंतर्गत आन्ध्र प्रदेश में दो, गुजरात, केरल, मद्रास, पश्चिम बंगाल और उड़ीसा में एक-एक, और मैसूर में तीन कालेज तथा महाराष्ट्र में पांच अल्पावधिक प्रशिक्षण केन्द्र खोले जा चुके थे। 1965-66 में असम में भी एक ट्रेनिंग-कालेज खोलने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की अनुमति दी गई थी । संभवत: यह 1966-67 में प्रारंभ हो जाएगा । जम्मू-कश्मीर तथा नागालैण्ड में कालेज खोलने के संबंध में संबंधित राज्य सरकारों से बातचीत चल रही है ।

3- स्वैच्छिक संस्थाओं को वित्तीय सहायता- इस योजना के अंतर्गत हिंदी-सेवी संस्थाओं को हिंदी के प्रचार-प्रसार और विकास के कार्यक्रमों के लिए वित्तीय सहायता दी जाती है । इस योजना का श्री गणेश प्रथम पंच-वर्षीय योजना में हुआ था । 1964-65 तक संस्थाओं को अनुमोदित खर्च का 60 प्रतिशत सहायता के रूप में दिया जाता था । अब इसे बढ़ाकर 75 प्रतिशत कर दिया गया है।

4- केन्द्रीय हिन्दी शिक्षण मण्डल, आगरा - अखिल भारतीय हिंदी परिषद्, आगरा नामक एक गैर-सरकारी संस्था की ओर से अखिल भारतीय हिंदी महाविद्यालय, आगरा में अहिंदी भाषी क्षेत्रों के हिंदी शिक्षकों को प्रशिक्षण पाने की सुविधाएं दी जाती थीं । सन् 1955-56 से भारत सरकार इस महाविद्यालय का शत-प्रतिशत खर्च वहन कर रही थी । 1960 में भारत सरकार ने केन्द्रीय हिन्दी शिक्षण मण्डल, आगरा नाम से एक स्वायत्त निकाय की स्थापना करने, अखिल भारतीय हिन्दी परिषद्, आगरा से अखिल भारतीय हिंदी महाविद्यालय लेकर हिंन्दी शिक्षण मण्डल, आगरा को सौंपने तथा उसे हिंदी शिक्षक-प्रशिक्षण के आदर्श संस्थान के रूप में विकसित करने का निर्णय किया । तदनुसार दिनांक 1-1-61 से अखिल भारतीय हिंदी महाविद्यालय, इस मण्डल के अन्तर्गत आ गया है और उसे केन्द्रीय हिन्दी संस्थान नाम दिया गया है ।

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान पर मण्डल को जितना खर्च करना पड़ता है वह उसे भारत सरकार से अनुदान के रूप में मिल जाता है । इसके अतिरिक्त उसे भारत सरकार की ओर से सौंपे गए कार्यों पर जो भी खर्च करना होता है उसे सरकार पूरा करती है । वैज्ञानिक पद्धति से हिन्दी शिक्षण की प्रणालियों पर अनुसंधान करने के लिए संस्थान में सुविधाएं उपलब्ध हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों में हिन्दी का प्रयोग और प्रगति

केन्द्रीय राजस्व नियंत्रण प्रयोगशाला (वित्त मंत्रालय), नई दिल्ली

सभी कर्मचारी हिन्दी-शिक्षण योजना के अन्तर्गत हिन्दी का प्रशिक्षण ले चुके हैं। हिन्दी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिन्दी में ही दिए जाते हैं। टिप्पण और आलेखन हिन्दी में ही करने की सुविधा है।

राष्ट्रपति सचिवालय, नई दिल्ली

राष्ट्रपति को भेजे गए पत्रों के उत्तर अंग्रेजी के अतिरिक्त हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं में भी दिए जाते हैं। हिन्दीभाषी राज्यों और व्यक्तियों से हिन्दी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिन्दी में ही दिए जाते हैं।

केन्द्रीय दावा संगठन (निर्माण, आवास और पुनर्वास मंत्रालय), नई दिल्ली

हिन्दी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिन्दी में दिए जाते हैं।

आपातिक जोखिम बीमा योजना (वित्त मंत्रालय), कानपुर

प्रायः सभी कर्मचारियों को हिन्दी का ज्ञान है और राज्यों तथा लोगों से हिन्दी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिन्दी में दिए जाते हैं।

बीमा नियंत्रक कार्यालय, शिमला

हिन्दी में लिखे पत्रों का उत्तर हिन्दी में ही दिया जाता है।

केन्द्रीय भविष्य-निधि आयुक्त कार्यालय, नई दिल्ली

हिन्दी में प्राप्त सभी पत्रों का उत्तर हिन्दी में दिया जाता है और उनसे संबंधित टिप्पण और आलेखन भी हिन्दी में किया जाता है। हाजिरी रजिस्टर में नाम हिन्दी में लिखे जाते हैं। चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों को सभी आदेश, अनुदेश आदि हिन्दी में दिए जाते हैं। छुट्टी की मंजूरी से संबंधित सभी कार्यालय आदेश हिन्दी में निकाले जाते हैं।

स्वर्ण नियंत्रण प्रशासक का प्रादेशिक कार्यालय (वित्त मंत्रालय), बम्बई

यहां अधिकांश अधिकारियों और कर्मचारियों को हिन्दी का ज्ञान है। शेष हिन्दी शिक्षण योजना के अन्तर्गत हिन्दी का प्रशिक्षण ले रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

x राजधानी में हिंदी दिवस

संविधान परिषद् ने सन् 1949 में 14 सितंबर को हिंदी को `राजभाषा` स्वीकार किया था। यह एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक निर्णय था। इसीलिए यह दिन प्रतिवर्ष `हिंदी दिवस` के रूप में मनाया जाता है।

दिल्ली में यह आयोजन संसदीय हिंदी परिषद्, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति और दिल्ली प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन के सम्मिलित तत्वावधान में संपन्न होता है। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी इन तीनों संस्थाओं के सम्मिलित तत्वावधान में दिल्ली में संसद-भवन के केन्द्रीय कक्ष में `हिंदी दिवस` मनाया गया। केन्द्रीय श्रम, रोजगार और पुनर्वास मंत्री श्री जगजीवन राम ने समारोह की अध्यक्षता की। इस अवसर पर उन्होंने कहा : "हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएं तभी पनप सकती हैं जब अंग्रेजी को अपने प्रभावशाली पद से अपदस्थ किया जाए। हिंदी और देश की अन्य भाषाओं में कोई वैमनस्य नहीं है। हमारी भाषाओं की प्रगति में अंग्रेजी सबसे बड़ा रोड़ा है। जब हमारी भाषाएं शिक्षा और प्रशासन का माध्यम हो जाएंगी तब अंग्रेजी पढ़ने का मोह चला जाएगा। हिंदी को विभिन्न भारतीय भाषाओं के शब्द आत्मसात् करने चाहिए। इससे हिंदी समृद्ध होगी और अन्य प्रदेशों में उसका मान बढ़ेगा। इसी प्रकार जो पारिभाषिक शब्दावली हिंदी में तैयार की गई और की जा रही है, उसका उपयोग सभी भारतीय भाषाओं में किया जा सकेगा। रूस में ऐसा ही होता है। क्या ही अच्छा हो कि हम अपनी भाषाओं के लिए एक ही लिपि स्वीकार कर लें।"

-0-

श्री लालबहादुर शास्त्री की जीवनी

लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट की राष्ट्रीय समिति ने शास्त्री जी की जीवनी को हिंदी और अन्य सभी भारतीय भाषाओं में प्रकाशित करने का निश्चय किया है।

-0-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

X प्रादेशिक अंचल में

- आन्ध्र प्रदेश

हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद का रजत जयंती समारोह

हैदराबाद में हिंदी प्रचार सभा के रजत जयंती समारोह का उद्घाटन आन्ध्र प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री ब्रह्मानंद रेड्डी ने तारीख 11 सितंबर को किया । उन्होंने कहा - भारत जैसे विशाल और महान देश की अपनी राष्ट्रीय भाषा होनी चाहिए । वह भाषा हिंदी ही हो सकती है । भारत की अधिकांश जनता हिंदी बोलती और समझती है । इसलिए उसे राष्ट्रभाषा के पद से कोई अलग नहीं कर सकता । दक्षिण भारत में लोग हिन्दी सीखते हैं । केन्द्र और राज्य सरकारों को प्रतियोगी-परीक्षाओं में हिंदी लागू करनी चाहिए ।

इसी अवसर पर भारत सरकार के हिंदी सलाहकार श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' ने कहा - राज्यों में जब तक हिंदी को सरकारी कामकाज की भाषा के रूप में स्वीकार न किया जाय, विश्वविद्यालयों में हिंदी-माध्यम का कोई लाभ न होगा ।

स्वागत समिति के अध्यक्ष पं० नरेन्द्र ने कहा - आन्ध्र प्रदेश पहला राज्य है जहां प्राथमिक कक्षा से हाई स्कूल तक हिंदी की शिक्षा अनिवार्य है ।

इस अवसर पर रवीन्द्र भारती के कला-भवन में केंद्रीय हिंदी निदेशालय (दिल्ली) की ओर से हिंदी के वैज्ञानिक और तकनीकी विषयों तथा साहित्य और संदर्भ ग्रंथों की प्रदर्शनी आयोजित की गई । डा० बी० रामकृष्ण राव ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया । उद्घाटन के अवसर पर आंध्र प्रदेश के मुख्य-मंत्री श्री ब्रह्मानंद रेड्डी भी उपस्थित थे । स्थानीय जनता के अतिरिक्त केरल, मद्रास, कर्नाटक आदि से आए लगभग तीन हजार लोगों ने प्रदर्शनी देखी ।

अंत:आन्ध्र विद्यालयीन हिंदी साहित्य प्रतियोगिता

हैदराबाद में सेंट पीटर्स हाई स्कूल में 'हिंदी दिवस' मनाया गया । इस अवसर पर अंत:आन्ध्र विद्यालयीन हिंदी साहित्य प्रतियोगिताएं हुईं जिनमें लगभग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

80 विद्यालय और 500 छात्राएं सम्मिलित हुईं। 25 पुरस्कार वितरित किए गए।

नागरी प्रचारिणी सभा में स्वागत-समारोह

काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा वाराणसी में आयोजित स्वागत-समारोह में प्रशासनिक सुधार आयोग के अध्यक्ष श्री मुरार जी देसाई ने कहा - पचास प्रतिशत से अधिक लोग हिंदी जानते और बोलते हैं। हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने की आवाज बंगाल, मद्रास, आंध्र और अन्य अहिंदी भाषी क्षेत्रों से ही उठी।

पं० किशोरी दास वाजपेयी को पेंशन

हिंदी के अनन्य सेवी पं० किशोरी दास वाजपेयी को उत्तरप्रदेश सरकार ने 100 रुपए मासिक पेंशन फिर से जारी कर दी है।

ज़िला कार्यालयों में हिंदी

मुख्य मंत्री श्रीमती सुचेता कृपलानी ने हिंदी-परामर्श समिति को बताया कि जिला स्तर पर सभी सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग के आदेश का पालन किया जाएगा।

हिंदी साहित्य सम्मेलन के नए सचिव

हिंदी साहित्य सम्मेलन के सचिव-पद पर श्री मोहन लाल भट्ट के स्थान पर श्री मौलिचन्द्र शर्मा नियुक्त किए गए हैं।

उत्तरप्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन

उत्तरप्रदेश हिंदी-साहित्य सम्मेलन का बारहवां अधिवेशन प्रयाग में संपन्न हुआ। सभापति पद से भाषण करते हुए डा० हरिशंकर शर्मा ने कहा - हिंदी के प्रचार के लिए एकता, त्याग एवं सौहार्द की आवश्यकता है।

- केरल

अखिल केरल हिंदी प्रचारक सम्मेलन

एर्नाकुलम में श्री मोरारजी देसाई ने अखिल हिंदी प्रचारक (कार्यकर्त्ता) सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कहा - जो लोग राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी का विरोध करते हैं उन्हें यह सोचना चाहिए कि वे भारत को कहां ले जाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहते हैं। यह बात निश्चित है कि निकट भविष्य में ही हमें हिंदी को राष्ट्र-भाषा के रूप में स्वीकार करना होगा।

केन्द्र हिंदी पुस्तकालय का उद्घाटन

16 सितंबर, 1966 को दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा (केरल) द्वारा एर्नाकुलम में संचालित तथा केन्द्र सरकार से अनुदान-प्राप्त केन्द्र हिंदी पुस्तकालय का उद्घाटन केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, दिल्ली के निदेशक ने किया। महाकवि जी0 शंकर कुरुप ने अध्यक्षता की।

- जम्मू-कश्मीर

जम्मू-कश्मीर में हिंदी की प्रगति

भारत सरकार के हिंदी सलाहकार श्री रामधारी सिंह `दिनकर` ने जम्मू-कश्मीर में हिंदी के शिक्षण से संबंधित समस्याओं का अध्ययन करने और राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा की जम्मू-कश्मीर शाखा के कार्य को देखने के लिए वहां का एक सप्ताह का दौरा किया। उन्होंने राज्य में हुई हिंदी की प्रगति के संबंध में संतोष प्रकट किया। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की जम्मू-कश्मीर शाखा ने पिछले 10 वर्षों में 13,000 लड़के-लड़कियों को हिंदी का शिक्षण दिया है। समिति हिंदी की परीक्षाएं आयोजित करने के अतिरिक्त हिंदी निबंध और वाद-विवाद प्रतियोगिता का भी आयोजन करती है। श्रीनगर में समिति का एक केन्द्रीय पुस्तकालय और वाचनालय है जिसमें 8,000 से अधिक हिंदी पुस्तकें हैं। अनंतनाग और लेह में भी पुस्तकालय हैं जिनमें से प्रत्येक में 1,500 से अधिक हिंदी पुस्तकें हैं।

- महाराष्ट्र

विदर्भ महाविद्यालय हिंदी साहित्य समिति

विदर्भ महाविद्यालय, अमरावती में हिंदी साहित्य समिति द्वारा `हिंदी-दिवस` का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि डा0 शिवाजी राव पटवर्धन ने कहा -`महाराष्ट्र ने मराठी के साथ-साथ हिंदी से भी उत्कट प्रेम किया है। ज्ञानदेव, तुकाराम, एकनाथ आदि संतों की रचनाएं इसका प्रमाण हैं।`

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- मैसूर

हिंदी शिक्षकों का पुनश्चर्या पाठ्यक्रम

कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति, बंगलौर द्वारा तारीख 1-8-66 से 14-9-66 तक उच्च प्राथमिक पाठशालाओं में काम करने वाले हिंदी शिक्षकों के लिए, छः सप्ताह का पुनश्चर्या पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें 120 हिंदी शिक्षकों को हिंदी शिक्षण की आधुनिक पद्धतियों से अवगत कराया गया।

- राजस्थान

हिंदी में हस्ताक्षर

राजस्थान सरकार के निर्णय के अनुसार सरकारी कर्मचारियों को 15 सितंबर से देवनागरी लिपि में ही हस्ताक्षर करने होंगे और उन्हें सरकारी कामकाज में प्रामाणिक माना जायगा।

केन्द्र से हिंदी में पत्र-व्यवहार

राजस्थान सरकार ने निश्चय किया है कि भारत सरकार तथा उसके कार्यालयों और अधिकारियों को राज्य सरकार की ओर से हिंदी में ही पत्र लिखे जाएंगे।

राजस्थान 'हिंदी व्यवहार-वर्ष' सम्मेलन

14 सितंबर को जयपुर में राजस्थान हिंदी व्यवहार-वर्ष सम्मेलन हुआ। अपने संदेश में मुख्य मंत्री श्री सुखाड़िया ने कहा - अगले वर्षों में सरकारी और गैर-सरकारी दोनों क्षेत्रों में हिंदीकरण की गति और बढ़ेगी और राजस्थान में 26 जनवरी 1968 तक सारा सरकारी कामकाज हिंदी में होने लगेगा।

इस अवसर पर राजस्थान के राज्यपाल डा० संपूर्णानंद, संसद सदस्य सेठ गोविन्द दास, राज्य के भाषा मंत्री श्री आचार्य के संदेश भी प्राप्त हुए।

अंतर्भारती साहित्य एवं कला परिषद

अंतर्भारती साहित्य एवं कला परिषद की ओर से अजमेर में हिंदी-दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित एक सभा में बोलते हुए राज्य की शिक्षा उप मंत्री श्रीमती प्रभा मिश्रा ने कहा: 'हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिससे संपूर्ण राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधा जा सकता है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

X विश्वविद्यालयों में

जम्मू तथा कश्मीर विश्वविद्यालय

स्नातकोत्तर हिंदी विभाग : एक परिचय

जम्मू तथा कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर में स्नातकोत्तर हिंदी विभाग की स्थापना सन् 1958 में हुई थी । इस समय विभाग में 4 प्राध्यापक हैं ।

अब तक कुल 123 छात्रों ने एम0 ए0 (हिंदी) परीक्षा पास की है । उत्तीर्ण छात्रों में से केवल 4 हिंदी-भाषी छात्र थे और शेष 119 अहिंदी-भाषी । 1965 की एम0 ए0 (उत्तरार्द्ध) परीक्षा में 10 विद्यार्थियों ने [illegible]णी प्राप्त की । इस वर्ष एम0 ए0 में कुल 71 छात्र अध्ययन कर रहे हैं जिनमें से केवल एक की मातृभाषा हिंदी है, शेष 70 अहिंदी-भाषी हैं । यह पहला अवसर है जबकि एक लद्दाखी छात्र भी एम0 ए0 (पूर्वार्द्ध) में पढ़ रहा है ।

विश्वविद्यालय ने दो शोध-छात्रों को उनके शोध-प्रबंधों पर पी0एच0डी0 की उपाधियां प्रदान की हैं । इस समय विभाग में कुल 11 छात्र शोध-कार्य कर रहे हैं जिनमें से तीन को भारत सरकार की ओर से 100 रु0 प्रतिमास छात्रवृत्ति दी जा रही है । 4 छात्र कश्मीरी तथा हिंदी भाषा के साहित्य की विभिन्न धाराओं का तुलनात्मक अध्ययन कर रहे हैं । शोध के अन्य विषय भी महत्वपूर्ण हैं । इनसे हिंदी साहित्य की श्रीवृद्धि निस्सन्देह होगी । विभाग के 13 अहिन्दी-भाषी छात्रों को भारत सरकार की ओर से 100 रु0 की मासिक छात्रवृत्तियां मिल रही हैं ।

हिंदी विभाग की साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियां उसकी अंतरंग संस्था हिंदी परिषद के द्वारा संपन्न होती हैं । परिषद की स्थापना अगस्त 1965 में की गई थी । परिषद का उद्देश्य विभाग के विद्यार्थियों में सृजनात्मक चेतना उत्पन्न करना तथा उन्हें नवीन एवं प्रगतिशील जीवन-मूल्यों की ओर उन्मुख करना है । इस वर्ष परिषद की कुल मिलाकर 35 बैठकें हुईं जिनमें अनेक साहित्यिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम संपन्न हुए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभाग के पुस्तकालय में लगभग 2600 ग्रंथ हैं। विभाग की ओर से "वितस्ता" नामक एक वार्षिक पत्रिका निकलती है जिसमें विभाग के प्राध्यापकों और छात्रों की साहित्यिक रचनाएं तथा हिंदी परिषद और विभाग की गतिविधियों का विवरण प्रकाशित होता है।

केरल विश्वविद्यालय

केंद्र सरकार के अनुदान से केरल विश्वविद्यालय (एर्नाकुलम) ने हिंदी विभाग में अनुवाद और पत्राचार के लिए एक स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम अगस्त, 1966 से शुरू किया है।

श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति में हिंदी शोध संगोष्ठी

श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति के हिंदी विभाग के तत्वावधान में 27 सितंबर से 2 अक्तूबर, 1966 तक हिंदी शोध संगोष्ठी संपन्न हुई। श्री भक्त दर्शन, केंद्रीय उप शिक्षा मंत्री ने 27 सितंबर को संगोष्ठी का उद्घाटन किया। इसमें शोध के विभिन्न पक्षों और समस्याओं पर अनेक महत्वपूर्ण शोध-निबंध पढ़े गए।

केंद्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति

श्री भक्त दर्शन, केंद्रीय उप शिक्षा मंत्री केंद्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति गए और वहां संस्कृत का अध्ययन तथा अनुसंधान करने वाले छात्रों से मिले और संस्कृत के विकास-प्रचार, प्रशिक्षण, अनुसंधान आदि के क्षेत्र में किए जा रहे विभिन्न कार्यों का अवलोकन किया।

-0--0-0-0-

बंबई में अखिल भारतीय हिंदी शिक्षक सेमिनार

हिंदी के प्रचार-प्रसार की केंद्रीय योजना के अंतर्गत बंबई हिंदी विद्यापीठ के तत्वावधान में हिंदी शिक्षकों का अखिल भारतीय सेमिनार बंबई में 30 अक्तूबर, से 8 नवंबर, 1966 तक होगा। अहिंदी भाषी क्षेत्रों में हिंदी अध्यापन की समस्याओं पर विचार और साहित्यिक विषयों पर चर्चा होगी।

-0-0-0-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

X. विदेशों में

हिंदी का पठन-पाठन

संघ की राजभाषा स्वीकृत हो जाने के बाद विदेशों में हिंदी के पठन-पाठन में पर्याप्त प्रगति हुई है। अनेक देशों में विश्वविद्यालय और पूर्व-विश्वविद्यालय स्तर पर हिंदी के शिक्षण की व्यवस्था है। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय की ओर से विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए प्रयत्न किए गए हैं। सन् 1958 से यह कार्य भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् के कार्यक्षेत्र में सुचारु रूप से चल रहा है। इस समय विदेशों में 56 केंद्र हैं जहां हिंदी का शिक्षण होता है। निम्नलिखित विदेशी विश्वविद्यालयों और विद्यालयों में विधिवत् हिंदी का शिक्षण चल रहा है :-

संयुक्त राज्य अमेरिका

1. कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले, कैलिफोर्निया।
2. क्लेरमोंट ग्रेजुएट स्कूल, क्लेरमोंट, कैलिफोर्निया।
3. हवाई विश्वविद्यालय, होनोलुलु, हवाई।
4. मिन्निसोटा विश्वविद्यालय, मिन्नियापोलिस, मिन्निसोटा।
5. पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय, फिलाडेल्फिया, पेन्सिलवेनिया।
6. सायराक्यूस विश्वविद्यालय, सायराक्यूस, न्यूयार्क।
7. विस्कोन्सिन विश्वविद्यालय, मैडिसन, विस्कोन्सिन।
8. शिकागो विश्वविद्यालय, इलिनोयस।
9. कार्नेल विश्वविद्यालय, इथाका, न्यूयार्क।
10. ड्यूक विश्वविद्यालय, डरहम, नोर्थ कैरोलिना।
11. टेक्सास विश्वविद्यालय, आस्टिन, टेक्सास।
12. मिशिगन विश्वविद्यालय, ऐन आरबर, मिशिगन।
13. वेक फॉरेस्ट कालेज, विंस्टन सेलम, नोर्थ कैरोलिना।

-0-0-0-

---क्रमश:

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निदेशालय के प्रकाशन

मानक-ग्रंथ

1. सम-स्थानिकों के संसार में (In the World of Isotopes) लेखक : वी० मेजेन्त्सेफ अनु० जगदीश चंद्र सोनी पृष्ठ संख्या : 98 मूल्य : 2.90
2. अर्धचालक और उनके उपयोग (Semi-Conductors and their use) लेखक : ए० एफ० यौफी अनु० उदितकुमार शर्मा पृष्ठ संख्या: 125 मूल्य: 3.75
3. शुद्धघन ज्यामिति प्रवेशिका (An Introduction to pure solid Geometry) ले० गणेश सखाराम महाजनि अनु०हरीश्वरप्रसाद सिन्हा पृष्ठ संख्या 102 मूल्य 4.15
4. अश्रव्य ध्वनियां (Sounds we cannot hear) ले० : बी० कुद्रयावत्सेव अनु० श्री पुरुषोत्तमलाल जैन पृष्ठ संख्या : 127 मूल्य : 3.10
5. कार्बोहाइड्रेट और ग्लाइकोसाइड ले०डा० फूलदेव सहाय वर्मा पृष्ठ:183 मूल्य:4.85
6. भारतीय परंपरा (Indian Heritage) ले० : प्रो० हुमायून् कबिर अनु० : महेंद्र चतुर्वेदी पृष्ठ सं० : 122 मूल्य : 2.50
7. अंतर्राष्ट्रीय संबंध ले० महेशप्रसाद टण्डन पृष्ठ सं० : 284 मूल्य : 8.80
8. भारत की वित्तीय शासन व्यवस्था ले० हरिगोपाल परांजपे पृष्ठ सं०:268 मूल्य:8.50
9. समीकरण सिद्धांत ले० डा० श्रीराम सिन्हा पृष्ठ सं० : 100 मूल्य : 5.35
10. माताओं और शिशुओं के रोगों की रोकथाम ले० : श्रो० मकेयेवा अनु० दिनेशचंद्र शर्मा पृष्ठ सं० : 198 मूल्य : 4.00
11. उल्काएँ (Meteors) ले०वी० फेडिंस्की अनु०पवनकुमार जैन पृष्ठ:122 मूल्य:2.60
12. रहस्यमय विश्व (The Mysterious Universe) ले० : जेम्स जीन्स अनु० : श्रीमती अनन्तलक्ष्मी अम्माल पृष्ठ संख्या : 110 मूल्य : 2.80
13. प्रकाश तरंगें और उनके उपयोग (Light Waves and Their Uses) ले० ए० ए० माइकेलसन अनु० ओम प्रकाश वर्मा पृष्ठ सं० : 146 मूल्य: 4.90
14. भाषा, सत्य और तर्क-शास्त्र (Language, Truth and Logic) ले० जे० ए० अय्यर अनु० : भूपेंद्रनाथ सान्याल पृष्ठ सं० : 148 मूल्य : 2.95
15. अपना हृदय सबल बनाइए (Strengthen Your Heart) ले० वी० जेलेनिन पृष्ठ:142

कोश साहित्य

1. पारिभाषिक शब्द-संग्रह (अंग्रेजी-हिंदी) (Consolidated Glossary of Technical Terms) पृष्ठ संख्या : 1370 मूल्य : 12.00
2. शब्दार्थ मीमांसा ले० रामचंद्र वर्मा पृष्ठ सं० : 362 मूल्य : 11.50

भाषा पत्रिका

अब तक 19 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। एक अंक का मूल्य 1.25

भाषा के विशेषांक

1. शांति-रक्षा अंक पृष्ठ संख्या : 148 मूल्य : 4.50
2. द्विवेदी स्मृति विशेषांक पृष्ठ संख्या : 270 मूल्य : 12.50

निदेशालय के सभी प्रकाशन अग्रिम धन भेजकर **प्रबन्धक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल्ली-8 और 31, थिएटर कम्युनिकेशन्स बिल्डिंग कनॉट प्लेस, नई दिल्ली** से खरीदे जा सकते हैं।

प्रो० ए० चंद्रहासन, निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित। संपादक: परशुराम शर्मा

महा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, मिन्टो रोड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जय नागरी

चार जगत

1966 अंक

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा-मंत्रालय

भारत सरकार

जय हिंदी, जय नागरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निदेशालय के प्रकाशन

मानक-ग्रंथ

सम-स्थानिकों के संसार में (In the World of Isotc
अनु॰ जगदीश चंद्र सोनी पृष्ठ संख्या : 98

अर्धचालक और उनके उपयोग (Semi-Conductor
लेखक : ए॰ एफ॰ यौफी अनु॰ उदितकुमार शर्मा

शुद्धघन ज्यामिति प्रवेशिका (An Introduction t
ले॰ गणेश सखाराम महाजनि अनु॰हरीश्वरप्रसाद सि

अश्रव्य ध्वनियां (Sounds we cannot hear) ले॰
अनु॰ श्री पुरुषोत्तमलाल जैन पृष्ठ संख्या : 12

कार्बोहाइड्रेट और ग्लाइकोसाइड ले॰डा॰ फूलदेव सहा

भारतीय परंपरा (Indian Heritage) ले
अनु॰ : महेंद्र चतुर्वेदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जय हिंदी : जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 1 अंक 3

नवंबर 1966

0 देश की एकता के लिए हिंदी

0 भाषा-संगम

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं - (विविध समाचार)

0 हिंदी

* भारत सरकार में
* राजधानी में
* प्रादेशिक अंचल में
* विश्वविद्यालयों में
* विदेशों में

"भारतीय भाषाएं हिन्दी के लिए बाहर की भाषाएं नहीं हैं। हमारी अधिकतर भाषाओं का उद्गम एक ही संस्कृति और पृष्ठभूमि से हुआ है। कोई कारण नहीं है कि हिंदी के अध्ययन से भारतीय भाषाओं की समृद्धि अथवा विकास में कोई बाधा उत्पन्न हो।"

- हिंदी शिक्षा समिति में शिक्षा मंत्री के वक्तव्य से

(केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, 15।16, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, दिल्ली-6 से प्रकाशित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0. भारतीय भाषाओं के विकास के लिए विश्वविद्यालयों का दायित्व

—डा0 वी0के0आर0वी0 राव, सदस्य, योजना आयोग

विभिन्न भाषाओं का व्यवहार करनेवाली देश की जनता के बीच संपर्क का माध्यम अंग्रेजी भाषा नहीं हो सकती। यह पद केवल हिंदी को ही मिल सकता है क्योंकि उसका व्यवहार देश का सबसे बड़ा जनसमुदाय कर रहा है। हिंदी को सच्चे अर्थ में राष्ट्रभाषा बनाने के लिए यह आवश्यक है कि अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दों को उसमें समाहित किया जाए।

विभिन्न भाषा-भाषियों के बीच पारस्परिक सद्भावना और सम्मान के लिए यह आवश्यक है कि विश्वविद्यालय आधुनिक भारतीय भाषाओं के पठन-पाठन की ओर अधिक ध्यान दें। अपने क्षेत्र की भाषा के सिवा अन्य क्षेत्र की भाषाओं के अध्यापन की व्यवस्था भी विश्वविद्यालयों में होनी चाहिए। भाषाओं के आनर्स पाठ्यक्रम का अनुसरण करने वाले छात्रों के लिए उनकी अपनी क्षेत्रीय भाषा के सिवाय एक या अधिक अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का अध्ययन अनिवार्य किया जा सकता है। अन्य क्षेत्र की भाषाओं के अध्ययन में रुचि उत्पन्न करने और विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के लिए छात्रवृत्तियों की व्यवस्था की जानी चाहिए।

विभिन्न भाषा के व्याकरणों की जांच कर के उन्हें अद्यतन बनाना और उनके विवेचन में यथासंभव एकरूपता लाना भी आवश्यक है। इस कार्य के लिए निकटस्थ विश्वविद्यालय ऐसे विद्वानों की मंडलियां संगठित कर सकते हैं जो संबंधित क्षेत्रीय भाषाओं के विशेषज्ञ हैं। पड़ोसी विश्वविद्यालयों को मिलकर संबंधित क्षेत्रीय भाषाओं की लिपियों की जांच भी करानी चाहिए ताकि सभी भारतीय भाषाओं के लिए एक समान-लिपि अपनाई जा सके।

द्विभाषी और बहुभाषी कोश तैयार करना अत्यन्त आवश्यक है और भारतीय विश्वविद्यालयों को इस दिशा में तत्परता से कदम उठाने चाहिए। (महाराज सयाजी राव विश्वविद्यालय, बड़ौदा के सोलहवें दीक्षान्त समारोह के अवसर पर दिए गए अभिभाषण के आधार पर)

– 0 –

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 भाषा-संगम

– संस्कृत के विकास-प्रसार के लिए शिक्षा मंत्रालय की योजनाएं

(गतांक से आगे)

5- प्रकाशन योजनाएं

(1) संस्कृत में उच्च स्तर की पुस्तकों का लेखन और प्रकाशन होता रहे, इस विचार से मंत्रालय द्वारा अनुमोदित रचनाओं के प्रकाशन व्यय का 60 प्रतिशत प्रकाशन-अनुदान दिया जाता है।

(2) संस्कृत की अधिकाधिक पुस्तकों के प्रकाशन को प्रोत्साहित करने के लिए मंत्रालय पुस्तकों की विशेषता और उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक पुस्तक की 25, 50 या 100 प्रतियां खरीदने की योजना पर भी अमल कर रहा है। लेखकों। प्रकाशकों से इस प्रकार खरीदी गई पुस्तकें शिक्षा-संस्थाओं को मुफ्त दे दी जाती हैं। इस प्रकार इस योजना से देश की संस्थाओं के पुस्तकालय भी समृद्ध होते हैं।

(3) मंत्रालय ऐसी पुस्तकों के पुनर्मुद्रण के लिए भी सक्रिय है जो काफी पहले मुद्रित हुई थी, लेकिन जो अब प्राप्य नहीं हैं। इस योजना के अन्तर्गत विश्वविद्यालय एवं अन्य अनुसंधान-संस्थाओं या प्रकाशकों को अप्राप्य ग्रंथों के पुनर्मुद्रणार्थ अपेक्षित सहायता प्रदान की जाती है। इस योजना के अंतर्गत अब तक ये पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं :- शब्द-कल्पद्रुम, गणरत्नमहोदधि, महाभारत में आए नामों की अनुक्रमणी, कानकार्डेन्स आफ उपनिषद्स, सिद्धान्त कौमुदी (श्री वसुकृत अनुवाद सहित), अष्टाध्यायी, शंकराचार्य ग्रंथावली। महाभाष्य (प्रदीप-उद्योत-छाया टीकाओं सहित) अभी मुद्रणाधीन है।

प्रकाशकों को उपदान (सब्सिडी) देकर महत्वपूर्ण अप्राप्य ग्रंथों के प्रकाशन की योजना के अन्तर्गत आप्टे के स्टूडेन्ट्स संस्कृत-इंग्लिश और स्टूडेन्ट्स इंग्लिश-संस्कृत शब्द कोशों का प्रकाशन क्रमश: 6 और 4 रुपए मूल्य रखकर कराया गया है। अब तक इन दोनों कोशों की बीस-बीस हजार प्रतियां छपवाई गई हैं। विक्रमोर्वशीय, विश्वगुणादर्श चम्पू, राघवपांडवीय, रावणार्जुनीय और तर्कसंग्रह के प्रकाशनार्थ आवश्यक कार्रवाई की जा रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(4) छात्रों को संस्कृत का आरंभिक ज्ञान देने वाली प्रामाणिक पुस्तकों की रचना के लिए मंत्रालय ने क्रमिक पाठमाला प्रतियोगिता का आयोजन किया था। छठी, सातवीं और आठवीं कक्षा के लिए लेखकों द्वारा प्रस्तुत पाठमालाओं की पांडुलिपियों पर पुरस्कार दिए जा चुके हैं।

(5) मंत्रालय ने संस्कृत में अन्य विषयों की पाठ्य-पुस्तकों की रचना को प्रोत्साहन देने के लिए भी एक योजना बनाई है। इस योजना के अन्तर्गत अब तक प्राप्त पुस्तकों पर पुरस्कार दिए जाने के लिए आवश्यक कार्रवाई की जा रही है।

(6) एक अन्य योजना के अन्तर्गत आधुनिक विषयों की अनूदित या मौलिक सामान्य पुस्तकों के प्रणयन को भी प्रोत्साहित किया जाएगा।

(7) दुर्लभ पुरानी पांडुलिपियों के संरक्षण के विषय में संस्कृत आयोग द्वारा की गई सिफारिश को ध्यान में रखकर, शिक्षा मंत्रालय ने ऐसी पांडुलिपियों के समीक्षात्मक संस्करणों के प्रकाशन और पांडुलिपियों की खरीद की भी योजना बनाई है। मंत्रालय प्राचीन पांडुलिपियों की सूचियां प्रकाशित करने के लिए भी अनुदान देता है। ऐसी पुस्तकों के प्रकाशकों को प्रकाशन-व्यय के 50 प्रतिशत के आधार पर सहायता दी जाती है। चौथी योजना में इसके लिए 15 लाख रु० रखे गए हैं।

(8) शब्दकोश-प्रकाशन-योजना के अन्तर्गत दक्कन कालेज, पूना में ऐतिहासिक सिद्धान्तों के आधार पर एक वृहत् संस्कृत शब्दकोश की रचना की जा रही है। इस कार्यक्रम के लिए कालेज को प्रति वर्ष डेढ़ लाख रुपए अनुदान के रूप में दिए जाते हैं। यह कोश 1968 तक पूरा होगा। इस योजना के अन्तर्गत विभिन्न शास्त्रों के अलग-अलग शब्द कोश और संस्कृत और प्रत्येक प्रादेशिक भाषा में द्वैभाषिक शब्दकोश प्रकाशित करने का भी विचार है। चौथी योजना में इस पर 5 लाख रु० खर्च होंगे।

-0-

-क्रमशः

संस्कृत के प्रसार के लिए सरकार के प्रयत्न

श्रीमती इंदिरा गांधी ने अ० भा० संस्कृत साहित्य-सम्मेलन के स्वर्ण जयंती समारोह में अध्यक्षीय भाषण में आश्वासन दिया कि देश में संस्कृत का भविष्य उज्ज्वल है और सरकार संस्कृत के प्रचार-प्रसार के लिए भरसक प्रयत्न कर रही है।

-0-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[illegible] हिंदी संस्थाएं (विविध समाचार)

के0 सचिवालय हिंदी परिषद : हिंदी टाइपिंग और आशुलिपि प्रतियोगिताएं

हिंदी टाइपिस्टों को प्रोत्साहन देने और देश भर में हिंदी टाइपिंग तथा हिंदी आशुलिपि का स्तर ऊंचा करने के लिए केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद ने नई दिल्ली में सेक्रेटेरियट ट्रेनिंग स्कूल के हिंदी टाइपिंग प्रशिक्षण केन्द्र में हिंदी टाइपिंग और आशुलिपि प्रतियोगिताएं आयोजित कीं ।

केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा : हिंदी निबंध प्रतियोगिता

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा स्थापित केन्द्रीय हिंदी संस्थान आगरा की ओर से अहिंदी भाषा-भाषियों के लिए हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी किया जा रहा है । प्रतियोगिता दो वर्गों में विभाजित है । पहले वर्ग के अन्तर्गत बी0 ए0 या उसके समकक्ष और दूसरे वर्ग के अन्तर्गत इंटरमीजिएट या उसके समकक्ष हिंदी साहित्य की योग्यता वाले व्यक्ति सम्मिलित हो सकते हैं । दोनों वर्गों के लिए तीन-तीन पुरस्कार क्रमश: 150 रु0, 75 रु0, 50 रु0 और 100 रु0, 50 रु0, 35 रु0 के होंगे । इनके अतिरिक्त दोनों वर्गों में प्रत्येक भाषा-वर्ग के लिए भी एक-एक पुरस्कार रखा गया है ।

राष्ट्रीय पुस्तक समारोह, 1966

नेशनल बुक ट्रस्ट के तत्वाधान में समस्त भारत में 5 नवंबर से 14 नवंबर 1966 तक `राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह` मनाया जा रहा है । इस अवसर पर बंबई के चर्च गेट मैदान में 5 नवंबर से 20 नवंबर 1966 तक `पुस्तक मेला` लगेगा और वाराणसी, दिल्ली, लखनऊ, प्रयाग, पटना, जबलपुर, जयपुर और जोधपुर में विशेष समारोह होंगे ।

--0--

सरकारी काम-काज हिन्दी में करने पर पुरस्कार

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् ने 1 नवंबर 1966 से 31 दिसंबर 1966 के बीच सरकारी काम-काज में सबसे अधिक हिन्दी का प्रयोग करने वाले कर्मचारियों को पुरस्कुत करने का नि यि किया है ।

--0--

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 हिन्दी

* भारत सरकार में

– वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग की योजनाएं

वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग अक्तूबर 1961 से केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के अधीनस्थ कार्यालय के रूप में कार्य कर रहा है । आयोग प्रमुखतः हिन्दी में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के निर्माण का कार्य कर रहा है । हिन्दी में वैज्ञानिक साहित्य के सृजन को प्रोत्साहित करना भी आयोग का उद्देश्य है । इस समय आयोग निम्नलिखित योजनाओं को कार्यान्वित कर रहा है :-

1- हिंदी में वैज्ञानिक और तकनीकी विषयों तथा मानविकी और समाज-विज्ञानों की श्रेणी में आने वाले विभिन्न विषयों की पारिभाषिक शब्दावली का विकास, पुनरीक्षण और समन्वय करना तथा उसे अन्तिम रूप देना । यह कार्य विशेषज्ञ-समितियों की सहायता से किया जाता है । विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ और भाषाविदों के सेमिनार आयोजित किए जाते हैं । अब तक शिमला, जयपुर, दिल्ली, मसूरी, बंगलौर, बंबई, मैसूर आदि स्थानों पर ऐसे सेमिनार आयोजित किए जा चुके हैं । इनमें प्रथम डिग्री स्तर की विज्ञान और मानविकी-शब्दावली का पुनरीक्षण करके उसे अन्तिम रूप दिया जा चुका है । गणित, भौतिकी, रसायन, वनस्पतिविज्ञान, प्राणि-विज्ञान, भू विज्ञान और भूगोल विषयक लगभग 40000 शब्दों की एक विज्ञान-शब्दावली (अंग्रेजी-हिंदी) प्रकाशित की जा चुकी है । इसका हिंदी-अंग्रेजी संस्करण तैयार किया जा रहा है । प्रशासनिक शब्दावली दो पुस्तिकाओं के रूप में प्रकाशित हो चुकी है । विभिन्न विषयों की स्नातकोत्तर शब्दावली तैयार की जा रही है ।

2- अनुप्रयुक्त विज्ञानों और टेक्नालाजी के विशिष्ट क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावली का विकास और समन्वय । इस योजना के अन्तर्गत इंजीनियरी, अनुप्रयुक्त भू भौतिकी, पेट्रोलियम, खनन, खनिज टेक्नालाजी, धातु विज्ञान, पशुचिकित्सा, पशुपालन, वानिकी आदि विशिष्ट क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावली के विकास और समन्वय का कार्य होता है । इसके लिए उपयुक्त तकनीकी संस्थाओं और केन्द्रों में एकक खोले जा रहे हैं । रुड़की विश्वविद्यालय में एक ऐसा ही सेल कार्य कर रहा है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

3- हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली का अन्य भारतीय भाषाओं के लिए अनुकूलन और समन्वय तथा अन्य भारतीय भाषाओं की लिपियों में शब्द-सूचियों का प्रकाशन । इस कार्य के निमित्त असमिया, बंगला, गुजराती, कन्नड़, मलयालम, मराठी, उड़िया, पंजाबी, तमिल और तेलुगु भाषी राज्यों की राजधानियों में 'पारिभाषिक शब्दावली केन्द्र' खोलने का विचार है ।

4- पारम्परिक कलाओं, शिल्पों, कृषि और प्राचीन साहित्य में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली का संकलन और प्रकाशन । इस योजना के दो भाग हैं - (1) कला, शिल्प, कृषि आदि क्षेत्रों में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली का संग्रह और (2) प्राचीन साहित्य से पारिभाषिक शब्दावली का संकलन ।

5- हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक और तकनीकी कोश निर्माण । इस योजना के अन्तर्गत पहले हिंदी के कोश आयोग स्वयं तैयार करेगा । हिंदी के कोशों के आधार पर अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के कोश भी बनाए जाएंगे । यह कार्य आयोग की देखरेख में क्षेत्रीय एककों की सहायता से सम्पन्न होगा ।

6- हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में पुस्तकों का सृजन, अनुवाद और प्रकाशन । इस योजना के दो भाग हैं :- (1) हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में विश्वविद्यालय स्तर के मानक ग्रंथों का अनुवाद और प्रकाशन । (2) प्रकाशकों के सहयोग से हिन्दी में पुस्तकों का प्रणयन, अनुवाद और प्रकाशन ।

7- (क) शब्द सूचियां, कोश, तदर्थ और विविध प्रकाशन तथा (ख) पारिभाषिक शब्दावली की त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन ।

आयोग की देखरेख और मार्गदर्शन में पुस्तकें, शब्द-सूचियां, कोश और दीपिकाएं आदि प्रकाशित की जाती हैं । आयोग ने अब तक (1) विज्ञान-शब्दावली (सात विज्ञान-विषयों की), (2) प्रशासन शब्दावली, (3) पदनाम शब्दावली और (4) वनस्पति विज्ञान, प्राणि विज्ञान, चिकित्सा, शिक्षा मनोविज्ञान और रसायन की पांच दीपिकाएं प्रकाशित की हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- केन्द्रीय सरकार के विभिन्न कार्यालयों में हिंदी

आकाशवाणी के भुज, कड्डपा, विजयवाड़ा, त्रिचूर, भोपाल, जयपुर, बंबई जालंधर, त्रिवेंद्रम, रायपुर, कानपुर, नागपुर, इलाहाबाद और कटक केन्द्रों में हिंदी का प्रयोग धीरे-धीरे बढ़ रहा है। नीचे लिखे अन्य कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के प्रयत्न इस प्रकार किए जा रहे हैं :- (1) हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाता है, (2) अधिकांश कर्मचारी हिंदी प्रशिक्षण ले चुके हैं, (3) कर्मचारियों को हिंदी में टिप्पण और आलेखन की सुविधा दी जा रही है, (4) इन कार्यालयों में प्रयुक्त अधिकांश फार्म । प्रोफार्मा द्विभाषिक रूप में छपाए जा चुके हैं :-

1- केन्द्रीय उत्पादन शुल्क कलक्टर के नागपुर, पटना और मद्रास कार्यालय।

2- सीमा शुल्क कलक्टर का कार्यालय, बंबई

3- आयात तथा निर्यात के संयुक्त मुख्य नियंत्रक का कार्यालय, मद्रास

4- प्रादेशिक श्रम आयुक्त (केन्द्रीय) का कार्यालय, मद्रास

5- राष्ट्रीय बचत संगठन, उत्तर प्रदेश मंडल, लखनऊ

6- अनुसूचित जातियों और अनुसूचित आदिम जातियों के आयुक्त का कार्यालय

7- विपणन और निरीक्षण निदेशालय, नागपुर - इस निदेशालय की पुस्तक 'एग्रीकल्चरल मार्केटिंग स्टेटिस्टिक्स' प्रति वर्ष हिंदी और अंग्रेजी में प्रकाशित होती है। अंग्रेजी में प्रकाशित 'मार्केटिंग न्यूज लेटर' का हिंदी रूपान्तर प्रकाशित करने के प्रश्न पर भी विचार किया जा रहा है।

8- केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला - इस संस्थान ने किसानों, विस्तार कार्यकर्ताओं, छात्रों आदि के लाभ और जानकारी के लिए निम्नलिखित चार पुस्तकें हिंदी में प्रकाशित की हैं :- (1) भारत के मैदानों में आलू बीज का उत्पादन, (2) भारतीय कृषि में आलू, (3) बिहार में आलू की खेती, (4) आलू की किस्में। उल्लेखनीय है कि इस संस्थान में सारा कामकाज हिंदी में ही होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाएं

संघ लोक सेवा आयोग ने गृह मंत्रालय को सूचित किया है कि संविधान में परिगणित सभी 14 भाषाओं को आयोग की परीक्षाओं का माध्यम बनाया जा सकता है । इससे स्तर गिरने की आशंका नहीं है । हिन्दी, बंगला, गुजराती और मराठी को परीक्षा का माध्यम तत्काल बनाया जा सकता है क्योंकि इन भाषाओं में स्नातकोत्तर शिक्षा की सुविधाएं उपलब्ध हैं ।

-विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा का माध्यम : भारतीय भाषाएं

योजना आयोग के शिक्षा विशेषज्ञ दल ने विचार प्रकट किया है कि विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषाएं होनी चाहिए ।

- प्रादेशिक भाषाओं का विकास

केन्द्रीय उप शिक्षा मंत्री श्री भक्त दर्शन ने जोधपुर में बताया कि चौथी योजना में प्रादेशिक भाषाओं के संवर्धन और विकास के लिए 16 करोड़ रु0 की व्यवस्था की गई है । इसके लिए भारत सरकार चौथी योजना में एक अलग संस्थान स्थापित करने का विचार कर रही है ।

- नव साक्षरों के साहित्य पर शिक्षा मंत्रालय का पुरस्कार

नव-साक्षरों के लिए लिखी गई श्रेष्ठ पुस्तकों पर शिक्षा मंत्रालय की ओर से हर वर्ष पुरस्कार दिये जाते हैं । इस वर्ष 12 वीं प्रतियोगिता में विभिन्न भाषाओं के लेखकों को पांच-पांच सौ रु0 के पुरस्कार दिये गये हैं । पुरस्कृत हिन्दी पुस्तकों और उनके लेखकों के नाम ये हैं:-
जंगल में खुशहाली नाचे (शंकर बाम), जननायक - युग - निर्माता जवाहर लाल नेहरु (आशा राम माहेश्वरी), प्रेरक प्रसंग (राम कृष्ण शर्मा), जय जवान (विजय कुमारी), संतों की वाणी और एकता की कहानी (अमर नाथ शुक्ल), ये रंग-बिरंगे पक्षी (जितेन्द्र कुमार अरुण), विज्ञान की विभूतियां (जय प्रकाश भारती), धरती की दौलत (वैद मित्र), देश की मशालें (प्रेमलता अग्रवाल), हमारा शरीर (सुरेश चन्द्र और महेश चन्द्र), और अपनी धरती अपने लोग (अनंत) ।

-- 00 --

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* राजधानी में

- संस्कृत सम्मेलन

स्थानीय दीवान हाल में आयोजित संस्कृत सम्मेलन में अध्यक्ष पद से भाषण करते हुए संसद सदस्य श्री रघुनाथ सिंह ने कहा कि हिन्दी ही देश की राजभाषा है और संस्कृत भाषा भारतीय जीवन की प्राणशक्ति है।

-दिल्ली प्रशासन में हिन्दी का प्रयोग

राजधानी परिषद के कार्यकारी पार्षद श्री राधारमण ने 9 अक्तूबर को एक बैठक का आयोजन किया जिसमें दिल्ली प्रशासन के कार्यालयों में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करने के उपायों पर विचार किया गया।

राशन और लोक पूर्ति विभागों में हिन्दी

कार्यकारी पार्षद श्री भीकूराम जैन ने दिल्ली में राशनिंग कार्य को अच्छी तरह से चलाने के लिए यह आदेश जारी किया है कि राशनिंग और लोक पूर्ति विभागों से जारी किए जानेवाले परिपत्र व्यापारियों और दुकानदारों को हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में भेजे जाएं।

-संसदीय हिन्दी परिषद : हिन्दी प्रयोग का आग्रह

संसदीय हिन्दी परिषद के महा मंत्री श्री मन्नूलाल द्विवेदी ने डा० वी०के०आर०वी० राव के विचारों से सहमति प्रकट करते हुए सुझाव दिया कि समस्त भारतीय विश्वविद्यालयों, लोक सेवा आयोग, सरकारी और गैर-सरकारी नियुक्तियों की परीक्षाओं का माध्यम भारतीय भाषाएं होनी चाहिए।

- जापान के विद्वान का हिन्दी भाषण

जापान के हिन्दी विद्वान तथा भारत स्थित जापानी दूतावास के राजनीतिक सचिव श्री क्योकि सुई हीरो ने नई दिल्ली में हिन्दी में भाषण करते हुए जापानी साहित्य की वर्तमान प्रवृत्तियों के बारे में बताया।

— 00 —

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* प्रादेशिक अंचल में

- असम

राज्य सरकार ने घोषणा की है कि 1 नवंबर 1966 से ब्रह्मपुत्र घाटी के जिलों की दीवानी अदालतों का कामकाज असमिया में और कछार जिले की दीवानी अदालतों का कामकाज बंगला में होगा ।

- उत्तर प्रदेश

हिन्दी विश्वकोष के सातवें खंड का विमोचन

रक्षा मंत्री श्री यशवंतराव चव्हाण ने वाराणसी में काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित हिन्दी विश्वकोष के सातवें खंड का विमोचन किया । इस खंड में 504 पृष्ठ हैं और विभिन्न विषयों पर 205 प्रसिद्ध लेखकों के 593 लेख हैं । विमोचन समारोह में भाषण देते हुए श्री चव्हाण ने कहा कि देश के लिए एक समान लिपि और एक राष्ट्रभाषा की बहुत आवश्यकता है । राष्ट्रभाषा से एकता और अखंडता में वृद्धि होगी ।

श्री परशुराम चतुर्वेदी को मंगला प्रसाद पुरस्कार

श्री परशुराम चतुर्वेदी को उनकी उत्कृष्ट निबंध-रचना 'उत्तरी भारत में संत परंपरा' पर संवत् 2016 का मंगला प्रसाद पुरस्कार देने का निर्णय किया गया है । 1200 रु0 का यह पुरस्कार हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से प्रति वर्ष काव्य, निबंध, दर्शन, तत्व विज्ञान, व्यावहारिक विज्ञान, इतिहास, समाजशास्त्र आदि विषयों की श्रेष्ठ रचनाओं पर दिया जाता है ।

- गुजरात

गुजरात विद्यापीठ में श्री मोरार जी देसाई का भाषण

अहमदाबाद के गुजरात विद्यापीठ में 'राष्ट्रीय विकास के मूलभूत तत्व' व्याख्यान माला के अन्तर्गत भाषण देते हुए श्री मोरार जी देसाई ने कहा कि इस देश में अंततः हिन्दी ही सर्वमान्य भाषा बनेगी । परंतु जब तक हम उसका उपयोग नहीं करेंगे, उसका समुचित विकास नहीं होगा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- पश्चिम बंगाल

सभी भारतीय भाषाओं का साहित्य हिन्दी में

भारत सरकार के उप शिक्षा मंत्री श्री [illegible] दर्जी ने कलकत्ते के एक साहित्यिक समारोह में कहा कि भारत की सभी भाषाओं की श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियों का हिन्दी में अनुवाद करने की आवश्यकता है और यह खुशी की बात है कि इस दिशा में इधर बहुत प्रगति हुई है। समारोह में हिन्दी, मराठी, नेपाली, बंगला, उर्दू, तमिल के प्रसिद्ध विद्वान उपस्थित थे।

'अणिमा' कार्यालय में 'भावनात्मक एकता' गोष्ठी

कलकत्ते से प्रकाशित कथा-पत्रिका 'अणिमा' के कार्यालय में 15 अक्तूबर को आयोजित एक गोष्ठी में देश की 'भावनात्मक एकता' पर मलयालम के विद्वान और केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के निदेशक, प्रो0 ए0 चन्द्रहासन, कलकत्ता विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रो0 कल्याणमल लोढ़ा, द0 भा0 हिन्दी प्रचार सभा, दिल्ली शाखा के मंत्री श्री भालचन्द्र आप्टे, गुजराती कथाकार श्री शिवकुमार जोशी, मैसूर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डा0 एन0 नागप्पा, गोष्ठी के आयोजक श्री शरद देवड़ा आदि ने अपने विचार व्यक्त किए।

- बिहार

अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचारिणी सभा, देवघर का उद्घाटन

22 अक्तूबर 1966 को वैद्यनाथ-देवघर में अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचारिणी सभा, देवघर का उद्घाटन प्रो0 ए0 चन्द्रहासन, निदेशक, केन्द्रीय हिंदी निदेशालय ने किया। श्री भालचन्द्र आप्टे ने उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता की।

- मध्यप्रदेश

प्रसिद्ध उपन्यासकार उषादेवी मित्रा का देहावसान

प्रेमचन्द युग की प्रसिद्ध हिन्दी कहानी लेखिका और उपन्यासकार श्रीमती उषा देवी मित्रा का जबलपुर में 19 सितंबर को 70 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। श्रीमती मित्रा ने 12 उपन्यास और 400 कहानियां लिखीं। उन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेक्सरिया पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है ।

- महाराष्ट्र

गांधी शताब्दी शिविर : संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी

सेवाग्राम (वर्धा) में गांधी शताब्दी शिविर के रचनात्मक कार्यकर्ताओं के बीच भाषण करते हुए संसद सदस्य श्री गंगाशरण सिंह ने कहा कि आज राष्ट्रीय एकता के लिए हिन्दी को संपर्क भाषा के रूप में विकसित करना होगा ।

- राजस्थान

राजस्थान साहित्य अकादमी की ओर से हिन्दी, राजस्थानी, संस्कृत और उर्दू के चार लेखकों को पांच-पांच सौ रुपयों के पुरस्कार दिए गए :- डा० गोवर्धन (हिन्दी), श्री नरसिंहराज पुरोहित (राजस्थानी), श्री पद्म शास्त्री (संस्कृत काव्य) और श्री हमीदुल्ला खां (बाल साहित्य) ।

- हरियाना

राष्ट्रभाषा के प्रचार का दायित्व सब पर

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति (वर्धा) के पंजाब प्रांतीय संचालक पं० दौलत राम शर्मा ने कुरुक्षेत्र में एक वक्तव्य में कहा कि हिन्दी का प्रचार करना सभी का राष्ट्रीय दायित्व है ।

-0-

नव-साक्षरों के लिए लिखित पुस्तकों की प्रतियोगिता

यूनेस्को द्वारा संचालित पांचवी नव साक्षर पुस्तक प्रतियोगिता के लिए शिक्षा मंत्रालय ने पुस्तकें आमंत्रित की हैं । प्रतियोगिता के अंतर्गत 946 रु० के 16 पुरस्कार दिए जायेंगे, हिन्दी पुस्तकों के लिए तीन और असमिया, बंगला, गुजराती, कन्नड़, कश्मीरी, मलयालम, मराठी, उड़िया, पंजाबी, सिंधी, तमिल, तेलुगु और उर्दू में लिखित पुस्तकों के लिए एक-एक पुरस्कार दिया जायगा । पुस्तकें 96 से लेकर 144 पृष्ठ तक की होनी चाहिए।उनमें अंतराष्ट्रीय सद्भावना, सामुदायिक विकास, आरंभिक विज्ञान, अर्थशास्त्र और सामाजिक विकास तथा सामान्य संस्कृति के किसी भी पहलू का विवरण दिया जा सकता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* विश्वविद्यालयों में

- केरल विश्वविद्यालय, एर्णाकुलम का हिंदी विभाग : एक परिचय

केरल विश्वविद्यालय, एर्णाकुलम में हिन्दी विभाग की स्थापना जून 1963 में प्रो० ए० चन्द्रहासन की अध्यक्षता में हुई। उस वर्ष छह छात्रों ने एम०ए० (हिंदी) में प्रवेश लिया जिनमें से 5 प्रथम श्रेणी में और एक द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ। इस समय विभाग में चार प्राध्यापक हैं।

आज तक कुल 26 छात्रों ने एम०ए० (हिन्दी) की परीक्षा पास की है। इस वर्ष एम०ए० (पूर्वार्द्ध) में 24 और एम०ए० (उत्तरार्द्ध) में 19 छात्र हैं। सभी छात्र भारतीय हैं और उनमें से किसी की भी मातृभाषा हिंदी नहीं है।

विभाग के अंतर्गत शोध-कार्य की व्यवस्था है। इस समय छह विषयों पर शोध-कार्य हो रहा है -

1- रीतिकाल की सामाजिक पृष्ठभूमि
2- उपेन्द्रनाथ 'अश्क' और उनकी कृतियों का अध्ययन
3- जयशंकर 'प्रसाद' के नाटकों में ऐतिहासिक पात्रों का चित्रण
4- बिहारी की भाषा और शब्दावली का अध्ययन
5- प्रसादोत्तर आधुनिक काल के हिंदी नाटकों में नारी - स्वरूप और समस्या
6- आधुनिक हिंदी और मलयालम काव्य में प्रकृति और प्रेम-भावना।

छात्रों में शोध-प्रवृत्ति जागृत करने और शोध-कार्य में अभिरुचि उत्पन्न करने के लिए विभाग के अन्तर्गत शोध-मण्डल (रिसर्च फोरम) की स्थापना की गई है जहाँ छात्र और अध्यापक अपने शोध-निबंध प्रस्तुत करते हैं।

अध्यापन और शोध-कार्य के अतिरिक्त, विभाग के अन्तर्गत प्रकाशन की भी योजनाएं हैं। 'प्राचीन कवि केशवदास-एक संकलन' और दिसंबर 1965 में संचालित ग्रीष्म-विद्यालय की पत्रिका आदि प्रकाशन निकल चुके हैं।

भारत सरकार की ओर से अहिन्दी-भाषी छात्रों को मैट्रिकोत्तर हिन्दी-अध्ययन के लिए छात्रवृत्तियां देने की योजना के अंतर्गत गत वर्ष विभाग के 15 छात्रों को छात्रवृत्तियां दी गई थीं। इस वर्ष भी 20 छात्रों ने छात्रवृत्ति के लिए आवेदन-पत्र दिए हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभाग के अन्तर्गत अनेक साहित्यिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम होते रहते हैं। सन् 1964 और 1965 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सहायता से दो संगोष्ठियां हुई जिनमें हिंदी के लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों ने भाग लिया। इस वर्ष भी ऐसा ही एक सेमीनार करने का विचार है। इसके अतिरिक्त, आचार्य वाजपेयी, दिनकर, बच्चन, अज्ञेय, डा० भगीरथ मिश्र प्रभृति अखिल भारतीय स्तर के हिंदी कवियों, लेखकों और आलोचकों के भाषण भी समय-समय पर आयोजित किए जाते रहे।

इनके अतिरिक्त वर्ष में एक बार शिक्षा-पर्यटन का भी आयोजन किया जाता है जिसमें विभाग के छात्र एक अध्यापक की देखरेख में हिंदी-भाषी क्षेत्रों के विभिन्न विश्वविद्यालयों और संस्थाओं का भ्रमण करते हैं और हिंदी-भाषी छात्रों के निकट सम्पर्क में आते हैं।

अगस्त 1966 से विभाग द्वारा एक प्रमाणपत्र-पाठ्यक्रम (सर्टिफिकेट कोर्स) चालू किया गया है जिसके अंतर्गत हिंदी में अनुवाद और सचिवालयीन आलेखन तथा टिप्पण की शिक्षा दी जाती है।

अलीगढ़ विश्वविद्यालय : हिंदी के पठन-पाठन के लिए बेसिक शब्दावली

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सहायता से हिंदी में बेसिक शब्दावली तैयार करने का काम अलीगढ़ विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के प्राध्यापक डा० कैलाश चन्द्र भाटिया कर रहे हैं।

जबलपुर विश्वविद्यालय : उपाधि-वितरण

जबलपुर विश्वविद्यालय ने निर्णय किया है कि दीक्षांत समारोहों में दी जाने वाली उपाधियां हिंदी में होंगी।

सागर विश्वविद्यालय : कामकाज हिंदी में

सागर विश्वविद्यालय के कार्यालय में प्रायः सभी कार्य हिंदी में किया जाने लगा है।

- - 0 - -

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* विदेशों में (गतांक से आगे)

विदेशी विश्वविद्यालय, जहां हिंदी शिक्षण की व्यवस्था है -

श्री लंका - (1) विद्यालंकार विश्वविद्यालय, (2) विद्योदय विश्वविद्यालय

जापान - (1) तोक्यो यूनिवर्सिटी आफ फ़ौरेन स्टडीज़, तोक्यो; (2) तोक्यो यूनिवर्सिटी, तोक्यो; (3) ओसाका यूनिवर्सिटी आफ फ़ौरेन स्टडीज़, ओसाका; (4) एशियन-अफ्रिकन लिंग्विस्टिक इन्स्टीट्यूट, मिताका, तोक्यो; (5) क्योतो यूनिवर्सिटी आफ क्योतो ।

इंग्लैण्ड - (1) यूनिवर्सिटी आफ कैम्ब्रिज़; (2) बेलबोर्न स्कूल आफ ला एण्ड लैंग्वेवेज़, लंदन (सायंकालीन कक्षाएं); (3) स्कूल आफ ओरिएण्टल एण्ड अफ्रिकन स्टडीज़ ।

सोवियत संघ - (1) इंस्टीट्यूट आफ ईस्टर्न लैंग्वेज़, मास्को स्टेट यूनिवर्सिटी; (2) लेनिनग्राड स्टेट यूनिवर्सिटी; (3) ताशकंद स्टेट यूनिवर्सिटी; (4) इंस्टीट्यूट आफ पीपुल्स आफ एशिया, एकेडेमी आफ साइन्सेज़, मास्को ।

—अजरबेजान विश्वविद्यालय में हिंदी शिक्षा की व्यवस्था

सोवियत समाजवादी गणराज्य अजरबेजान के शिक्षा मंत्री श्री राजबोज ने 22 अक्तूबर को हैदराबाद में बताया कि अज़रबेजान विश्वविद्यालय में हिंदी और उर्दू की शिक्षा के लिए एक विभाग स्थापित करने की योजना है ।

—लंदन में केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद् की शाखा की स्थापना

परिषद के संगठन मंत्री ने रायपुर में बताया कि लन्दन स्थित भारतीय उच्चायुक्त के कार्यालय में सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को लोकप्रिय बनाने के लिए शीघ्र ही परिषद् की शाखा खुलने वाली है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी बनाम अंग्रेजी

(प्रो० ए० चन्द्रहासन)।

हिन्दी का अंग्रेजी से कोई झगड़ा नहीं है। यह कहना कि हिन्दी अंग्रेजी से स्पर्धा कर रही है, अत्यन्त खेदजनक है। हमारे देश में प्रश्न हिन्दी अंग्रेजी का नहीं है। प्रश्न तो देशी भाषा बनाम विदेशी भाषा का है। अंग्रेजी भाषा अच्छी है। देश के बाहर कई राज्यों में अंग्रेजी प्रचलित है और प्रत्येक भारतीय अंग्रेजी सीख लेगा तो अच्छा ही है। लेकिन हिन्दी के मुकाबले में अंग्रेजी को खड़ा करके यह कहना कि अंग्रेजी अच्छी है, हमारे देश में व्यवहार के लिए उपयुक्त है, इसलिए अंग्रेजी को ही रहने दिया जाय, यह अनुचित है। अपने देश की भाषा में व्यवहार करना, काम-काज करना, बोलना, लिखना, लोकमान्य तिलक के शब्दों में हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और उस अधिकार से किसी भारतीय को वंचित करना असल में देश के प्रति अन्याय है। अंग्रेजी के पक्षपातियों का यह कहना कि अंग्रेजी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है, इसलिए अंग्रेजी सीखने से देश का कल्याण होगा, अतिशयोक्तिपूर्ण है। मेरे खयाल में कोई भी भाषा अन्तर्राष्ट्रीय नहीं है। अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों की कार्रवाइयों को देख लें तो मालूम होगा कि वहां अंग्रेजी में बोलने वाले 30 प्रतिशत भी नहीं हैं। जिन राज्यों में ब्रिटेन या अमरीका का प्रभाव है उन राज्यों में अंग्रेजी अवश्य लोकप्रिय है लेकिन उन देशों की जनसंख्या कम है और अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में अन्य भाषाओं में बोलने वाले काफी मिल जाते हैं। इसलिए यह कहना कि अंग्रेजी सीख कर हम दुनियां के सारे देशों में काम चलाएंगे यह भ्रमपूर्ण है।

. . . .

अतः मेरा विचार है कि अंग्रेजी को मानी हुई राजभाषा न समझ कर एक वैकल्पिक उप-भाषा समझकर पढ़ना चाहिए और देश के विद्यालयों में उसके लिए इतनी ही व्यवस्था कर देनी चाहिए।

(बिहार राष्ट्रभाषा परिषद के पंद्रहवें वार्षिक-सम्मेलन में दिए गए अध्यक्षीय भाषण से उद्धृत।)

- - 0 - -

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी समाचार जगत

नवंबर 1966 रजिस्ट्रेशन संख्या

उद्देश्य

1. देश और विदेश में हिंदी के प्रचार, प्रसार, विकास तथा समृद्धि के लिए सरकारी और गैर-सरकारी माध्यम से किए जाने वाले प्रयत्नों का आकलन और प्रकाशन ।

2. हिंदी के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार और प्रगति से संबंधित समाचारों का संकलन और प्रकाशन ।

नियम

1. पत्रक प्रति मास प्रथम सप्ताह में प्रकाशित होगा ।

2. पत्रक की भाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी ।

3. केन्द्रीय हिंदी निदेशालय (शिक्षा-मंत्रालय) के निदेशक पत्रक के संपादन-परामर्श-मंडल के अध्यक्ष होंगे; उप निदेशक (प्रकाशन) और संपादक (प्रकाशन) सदस्य होंगे तथा संपादक (हिंदी) सदस्य-सचिव होंगे ।

4. पत्रक का प्रकाशन के० हिंदी निदेशालय के निदेशक द्वारा किया जाएगा ।

5. निःशुल्क सरकारी प्रकाशन के रूप में इसकी प्रतियां केन्द्रीय मंत्रालयों, संसद-सदस्यों, राज्य सरकारों, विश्वविद्यालयों, प्रमुख पुस्तकालयों, स्वैच्छिक हिंदी संस्थाओं, लेखकों, प्रकाशकों तथा हिंदी-प्रेमियों को वितरित की जाएंगी ।

6. पत्रक का संपादकीय कार्यालय 15। 16 नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, दिल्ली-6 में रहेगा ।

7. पत्रक के संबंध में पत्र-व्यवहार का पता :-

संपादक, 'हिन्दी समाचार जगत',
केन्द्रीय हिंदी निदेशालय,
15। 16, नेताजी सुभाष मार्ग,
दरियागंज, दिल्ली-6.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
078.085
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निदेशालय के प्रकाशन

मानक-ग्रंथ

1. सम-स्थानिकों के संसार में (In the World of Isotopes) लेखक : वी० मेजेन्सेफ अनु० जगदीश चंद्र सोनी पृष्ठ संख्या : 98 मूल्य : 2.90
2. अर्धचालक और उनके उपयोग (Semi-Conductors and their use) लेखक : ए० एफ० योफी अनु० उदितकुमार शर्मा पृष्ठ संख्या: 125 मूल्य: 3.75
3. शुद्धघन ज्यामिति प्रवेशिका (An Introduction to pure solid Geometry) ले० गणेश सखाराम महाजनि अनु० हरीश्वरप्रसाद सिन्हा पृष्ठ संख्या 102 मूल्य 4.15
4. अश्रव्य ध्वनियां (Sounds we cannot hear) ले० : वी० कुद्रयावत्सेव अनु० श्री पुरुषोत्तमलाल जैन पृष्ठ संख्या : 127 मूल्य : 3.10
5. कार्बोहाइड्रेट और ग्लाइकोसाइड ले० डा० फूलदेव सहाय वर्मा पृष्ठ : 183 मूल्य: 4.85
6. भारतीय परंपरा (Indian Heritage) ले० : प्रो० हुमायून् कबिर अनु० : महेंद्र चतुर्वेदी पृष्ठ सं० : 122 मूल्य : 2.50
7. अंतर्राष्ट्रीय संबंध ले० महेशप्रसाद टण्डन पृष्ठ सं० : 284 मूल्य : 8.80
8. भारत की वित्तीय शासन व्यवस्था ले० हरिगोपाल परांजपे पृष्ठ सं०: 268 मूल्य: 8.50
9. समीकरण सिद्धांत ले० डा० श्रीराम सिन्हा पृष्ठ सं० : 100 मूल्य : 5.35
10. माताओं और शिशुओं के रोगों की रोकथाम ले० : ओ० मकेयेवा अनु० दिनेशचंद्र शर्मा पृष्ठ सं० : 198 मूल्य : 4.00
11. उल्काएँ (Meteors) ले० वी० फेडिंस्की अनु० पवनकुमार जैन पृष्ठ: 122 मूल्य: 2.60
12. रहस्यमय विश्व (The Mysterious Universe) ले० : जेम्स जीन्स अनु० : श्रीमती अनन्तलक्ष्मी अम्माल पृष्ठ संख्या : 110 मूल्य : 2.80
13. प्रकाश तरंगें और उनके उपयोग (Light Waves and Their Uses) ले० ए० ए० माइकेलसन अनु० ओम प्रकाश वर्मा पृष्ठ सं० : 146 मूल्य: 4.90
14. भाषा, सत्य और तर्क-शास्त्र (Language, Truth and Logic) ले० जे० ए० अय्यर अनु० : भूपेंद्रनाथ सान्याल पृष्ठ सं० : 148 मूल्य : 2.95
15. अपना हृदय सबल बनाइए (Strengthen Your Heart) ले० वी० जेलेनिन पृष्ठ: 142

कोश साहित्य

1. पारिभाषिक शब्द-संग्रह (अंग्रेजी-हिंदी) (Consolidated Glossary of Technical Terms) पृष्ठ संख्या : 1370 मूल्य : 12.00
2. शब्दार्थ मीमांसा ले० रामचंद्र वर्मा पृष्ठ सं० : 362 मूल्य : 11.50

भाषा पत्रिका

अब तक 19 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। एक अंक का मूल्य 1.25

भाषा के विशेषांक

1. शांति-रक्षा अंक पृष्ठ संख्या : 148 मूल्य : 4.50
2. द्विवेदी स्मृति विशेषांक पृष्ठ संख्या : 270 मूल्य : 12.50

निदेशालय के सभी प्रकाशन अग्रिम धन भेजकर **प्रबन्धक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल्ली-8** और 31, **थिएटर कम्युनिकेशन्स बिल्डिंग कनॉट प्लेस, नई दिल्ली** से खरीदे जा सकते हैं।

प्रो० ए० चंद्रहासन, निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित। संपादक: परशुराम शर्मा

महा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, मिन्टो रोड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी समाचार जगत

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा-मंत्रालय

भारत सरकार

जय हिंदी, जय नागरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

राजिस्ट्रेशन संख्या : आर एन् 12817।66

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जय हिंदी : जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 1 दिसम्बर 1966 अंक 4

0 देश की एकता के लिए हिंदी (प्रधान मंत्री का संदेश)

0 भार ती-संगम (संस्कृत के प्रचार-प्रसार की योजनाएं)

0 स्वीकृत हिंदी संस्थाएं - (हिन्दी परीक्षाओं की मान्यता)

0 हिन्दी

* भारत सरकार में * राजधानी में

* प्रादेशिक अंचल में * विश्वविद्यालयों में * विदेशों में

0 पाठकों से

सत्यमेव जयते प्रधान मंत्री भवन

सन्देश

"हिन्दी समाचार जगत" का अंक प्राप्त हुआ।

सरकारी क्षेत्र में हिन्दी के लिये क्या कुछ हो रहा है इसका आपने अच्छा संकलन किया है और यह प्रयास सर्वथा अभिनन्दनीय है।

बधाई स्वीकार करें।

ह0/-

इन्दिरा गांधी

नई दिल्ली,
नवम्बर 4, 1966।

(केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, 15। 16, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, दिल्ली-6 से प्रकाशित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृत के विकास-प्रसार के लिए शिक्षा मंत्रालय की योजनाएं

(गतांक से आगे)

6- संस्कृत पत्रिकाएं

संस्कृत पत्रिकाओं को वित्तीय सहायता देने की योजना के अन्तर्गत पत्रिकाओं को अपनी पृष्ठ संख्या बढ़ाने या अपनी पाठ्य-सामग्री को अधिक रोचक बनाने के लिए सहायता दी जाती है। मंत्रालय से नियमित सहायता पाने वाली कुछ पत्रिकाओं के नाम ये हैं : अमृतलता, कल्याणी, गांडीवम्, गैवाणी, दिव्यज्योति, प्रणव-पारिजात, बाल संस्कृतम्, भारत वाणी, भारती, भारतोदय, मनोरमा, मालव मयूर, उद्यान पत्रिका, विश्व संस्कृतम्, संविद्, संस्कृत प्रचारकम्, संस्कृत रत्नाकर और संस्कृत साहित्य परिषद् पत्रिका।

7- शिक्षण संबंधी योजनाएं

(1) छात्रों में संस्कृत संभाषण की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करने के लिए मंत्रालय प्रति वर्ष अखिलभारतीय संस्कृत वाक् प्रतियोगिता का आयोजन करता है। यह प्रतियोगिता आठ विषयों में की जाती है। प्रत्येक विषय-क्षेत्र में प्रथम, द्वितीय और तृतीय आने वाले प्रतियोगी को क्रमशः स्वर्ण पदक, रजत पदक और 50 रुपए दिए जाते हैं। सबसे अधिक अंक पाने वाले राज्य की टोली को एक चल वैजयन्ती प्रदान की जाती है।

(2) संस्कृत के अनुसंधित्सुओं को अनुसंधान की प्रक्रिया का प्रशिक्षण देने के लिए पहला प्रशिक्षण-क्रम डेक्कन कालेज, पूना में अप्रैल 1965 में आयोजित किया गया था। इसमें दस चुने हुए अध्येताओं ने भाग लिया। दूसरा प्रशिक्षण-क्रम शीघ्र ही आरंभ होगा।

(3) संस्कृत के शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए मंत्रालय ने संस्कृत शिक्षकों, और शिक्षाविदों की संगोष्ठियां आयोजित करने की योजना बनाई है। पहली संगोष्ठी 1967 के मध्य में आयोजित करने का विचार है। चौथी पंचवर्षीय योजना में इन संगोष्ठियों और प्रदर्शनियों पर सरकार ने 1 लाख रुपए खर्च करने का अनुमोदन दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(1) अभावग्रस्त संस्कृत पंडितों को आर्थिक सहायता देने की योजना के अधीन संस्कृत के उन विद्वानों को सहायता दी जाती है जिनकी आयु 55 वर्ष या उससे अधिक हो और समग्र वार्षिक आय 1500 रुपए से अधिक न हो। सहायता की अधिकतम राशि 1800 रुपए प्रति वर्ष है। इसमें से आवेदक की वर्तमान कुल आय घटाकर शेष रकम उसे दी जाती है। दो सौ से अधिक पंडित इस योजना का लाभ उठा रहे हैं।

(2) संस्कृत शिक्षण के समग्र प्रश्न पर विचार करने के लिए विशेषकर संस्कृत शिक्षकों की आर्थिक शोचनीय दशा को सुधारने के लिए, सभी माध्यमिक स्कूलों में संस्कृत की शिक्षा की व्यवस्था करने के लिए, राज्यों में संस्कृत शिक्षण की एक समान अवधि निर्धारित करने के लिए, शिक्षकों के एक समान वेतनमान निश्चित करने के लिए और सभी राज्यों में सुसम्पन्न संस्कृत शिक्षा निदेशालयों की स्थापना के लिए शिक्षा मंत्रालय ने कुछ समय पहले सभी राज्यों के शैक्षिक प्रतिनिधियों की एक बैठक बुलाई थी। सभी राज्यों से उपर्युक्त तथा कुछ अन्य प्रश्नों पर अपने-अपने राज्य की वर्तमान स्थिति की जानकारी और सुझाव भेजने का अनुरोध किया गया था। सभी राज्यों के उत्तर मिलते ही अगली बैठक बुलाई जाएगी।

(3) मंत्रालय विभिन्न राज्यों को संस्कृत के प्रचार-प्रसार से संबंधित उनकी योजनाओं के लिए भी अनुदान देता है। तीसरी पंचवर्षीय योजना में इस प्रयोजन की पूर्ति के लिए 2.33 लाख रुपए खर्च किए गए थे और चौथी योजना में इस पर दस लाख रुपए खर्च किए जाने का अनुमान है।

(4) उपर्युक्त कार्यक्रमों के अतिरिक्त चौथी पंचवर्षीय योजना की अवधि में कुछ अन्य कार्यक्रम भी बनाए जा सकते हैं। केन्द्रीय संस्कृत मंडल उपर्युक्त योजनाओं के अतिरिक्त जिन अन्य योजनाओं की कार्यान्विति की सिफारिश करेगा, उनके लिए चौथी पंचवर्षीय योजना में 15 लाख रुपए की व्यवस्था की गई है।

(समाप्त)

-0-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी परीक्षाओं की मान्यता

पिछले कई वर्षों से देश में अनेक स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाएं हिन्दी के प्रचार-प्रसार और विकास में संलग्न हैं। इनमें बहुत सी संस्थाएं अन्य कार्यों के साथ-साथ हिन्दी परीक्षाएं भी संचालित कर रही हैं।

हिन्दी शिक्षा समिति की सिफारिशों के आधार पर भारत सरकार ने अपने अधीन नौकरियों के प्रयोजन से नीचे अनुबंध में उल्लिखित विभिन्न संस्थाओं द्वारा ली जाने वाली हिन्दी परीक्षाओं को उनके सामने कालम-3 में उल्लिखित परीक्षाओं के केवल हिन्दी स्तर के समकक्ष, 31 दिसंबर 1966 तक के लिए मान्यता प्रदान की है। मान्यता अवधि को बढ़ाने और नई आवेदक संस्थाओं द्वारा संचालित परीक्षाओं को मान्यता देने के संबंध में जो निर्णय हुआ है वह अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा।

संस्था का नाम	मान्यता-प्राप्त परीक्षा	समकक्ष परीक्षा (केवल हिन्दी स्तर)
1	2	3
1- हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग	प्रथमा	एस०एल०सी०
	मध्यमा (विशारद)	बी०ए०
	उत्तमा (साहित्य रत्न)	बी०ए०(आनर्स)(हिंदी में)
2- राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा	परिचय	एस०एल०सी०
	कोविद	इण्टर
	रत्न	बी० ए०
3- हिंदी प्रचार सभा हैदराबाद	विशारद	एस०एल०सी०
	भूषण	इण्टर
	विद्वान	बी० ए०
4- बंबई हिन्दी विद्यापीठ बंबई	उत्तमा	एस०एल०सी०
	भाषा रत्न	इण्टर
	साहित्य सुधाकर	बी०ए०
5- महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पूना	प्रबोध	एस०एल०सी०
	प्रवीण	इण्टर
	पण्डित	बी०ए०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1	2	3
6- गुजरात विद्यापीठ	तीसरी	एस०एल०सी०
अहमदाबाद	विनीत	इण्टर
	सेवक	बी० ए०
7- दक्षिण भारत हिंदी	प्रवेशिका	एस० एल० सी०
प्रचार सभा, मद्रास	विशारद	इण्टर
	प्रवीण	बी० ए०
8- असम राष्ट्रभाषा प्रचार	प्रबोध	एस० एल० सी०
समिति, गौहाटी	विशारद	इण्टर
9- मणिपुर हिंदी परिषद,	प्रबोध	एस० एल० सी०
इम्फाल	विशारद	इण्टर
10- हिंदुस्तानी प्रचार सभा, बंबई	तीसरी	एस० एल० सी०
	काबिल	इण्टर
	विद्वान	बी० ए०
11- भारतीय विद्यापीठ, बंबई	तृतीय	एस० एल० सी०
	रत्न	इण्टर
12- बंबई हिंदी सभा, बंबई	विबोध	एस० एल० सी०
	विशारद	इण्टर
13- मैसूर हिंदी प्रचार परिषद	प्रवेश	एस० एल० सी०
बंगलौर	उत्तमा	इण्टर
	रत्न	बी० ए०
14- केरल हिंदी प्रचार सभा,	प्रवेश	एस० एल० सी०
त्रिवेन्द्रम	भूषण	इण्टर
15- हिंदी विद्यापीठ, देवघर	प्रवेशिका	एस० एल० सी०
	साहित्य भूषण	इण्टर
	साहित्यालंकार	बी० ए०

-- 0 --

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

० हिन्दी

* भारत सरकार में

– शिक्षा मंत्रालय

नवंबर मास में शिक्षा मंत्रालय के अन्तर्गत हिंदी विषयक अनेक महत्वपूर्ण कार्यक्रम सम्पन्न हुए। संक्षिप्त विवरण यहां दिए जा रहे हैं –

1. हिन्दी शिक्षा समिति की बैठक

उप शिक्षा मंत्री श्री भक्त दर्शन की अध्यक्षता में 19 नवंबर को हिंदी शिक्षा समिति की उन्नीसवीं बैठक विज्ञान भवन (नई दिल्ली) में हुई जिसमें हिंदी के प्रचार-प्रसार और विकास के लिए अनेक नए कार्यक्रम प्रारंभ करने और पुराने कार्यक्रमों में वृद्धि और गति लाने की सिफारिशें की गईं। विश्वविद्यालयों को हिंदी और हिंदीतर क्षेत्रीय भाषाओं में पुस्तकें तैयार और प्रकाशित कराने के लिए शत-प्रतिशत वित्तीय सहायता देने, सस्ते शब्दकोश और लोकप्रिय पुस्तकें तैयार कराने, चौथी पंचवर्षीय योजना के अंत तक पारिभाषिक शब्दकोश प्रकाशित करने और अहिंदी भाषी क्षेत्रों के हिंदी लेखकों को अधिक प्रोत्साहन देने के संबंध में सिफारिश की गई।

2. अहिंदी भाषी क्षेत्रों के हिंदी लेखकों को पुरस्कार-वितरण

26 नवंबर को विज्ञान भवन (नई दिल्ली) में शिक्षा मंत्रालय की ओर से अहिंदी भाषी क्षेत्रों के हिंदी लेखकों को उनकी महत्वपूर्ण कृतियों पर पुरस्कार देने का विशाल आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता गृहमंत्री श्री यशवंत राव चव्हाण ने की और पुरस्कार वितरण प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के कर-कमलों से सम्पन्न हुआ।

सर्वप्रथम उप शिक्षा मंत्री श्री भक्त दर्शन ने अतिथियों का स्वागत करते हुए अहिन्दी भाषी क्षेत्रों के हिंदी लेखकों को पुरस्कृत करने की योजना का परिचय दिया। तत्पश्चात् गृहमंत्री श्री चव्हाण ने योजना का महत्व दर्शाते हुए कहा कि ऐसी योजना देश की भावात्मक एकता के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने अपने भाषण में कहा कि विदेशी भाषा के सहारे कोई भी राष्ट्र प्रगति नहीं कर सकता। उन्होंने आशा प्रकट की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि हिंदी की उन्नति तेजी से होगी और वह देश की एकता का साधन बनेगी । उन्होंने यह भी कहा कि हिंदी के दो सबसे बड़े प्रचारक स्वामी दयानन्द और महात्मा गांधी थे और वे दोनों ही अहिंदी भाषी थे । हिंदी के प्रमुख संपादक भी एक अहिंदी भाषी श्री बाबू राव विष्णु पराड़कर थे ।

समारोह में दस लेखकों को पंद्रह-पंद्रह सौ रुपयों के नकद पुरस्कार दिए गए । सूचना और प्रसारण मंत्री श्री राज बहादुर ने लेखकों को बधाई देते हुए कहा कि वे राष्ट्र की महान सेवा कर रहे हैं । उनकी लेखनी से ही देश की भावात्मक एकता को बढ़ावा मिलेगा और उनका योगदान सदा याद रहेगा । स्वाधीनता को पूरा सम्मान तभी मिलेगा जब कि हम विदेशों में जाकर भी अपनी भाषा का ही व्यवहार करें ।

3. हिंदी-अंग्रेजी व्यावहारिक कोश का विमोचन

इसी अवसर पर केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, शिक्षा मंत्रालय द्वारा प्रणीत और प्रकाशित हिंदी-अंग्रेजी व्यावहारिक शब्दकोश का विमोचन प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने किया । यह कोश भूतपूर्व प्रधान मंत्री स्वर्गीय पं० नेहरू की इच्छा और निर्देश के अनुसार तैयार किया गया है ।

4. संगोष्ठी का आयोजन

26 नवंबर को ही विज्ञान भवन में हिंदी निदेशालय की ओर से एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया; विषय था 'अहिंदी भाषी क्षेत्रों के हिंदी लेखकों का हिंदी साहित्य को योगदान'। संगोष्ठी का उद्घाटन उप शिक्षा मंत्री श्री भक्त दर्शन ने किया और अध्यक्षता संसद सदस्या डा० सरोजनी महिषी ने की । संगोष्ठी में भाग लेने वाले विद्वान थे - सर्व श्री प्रभाकर माचवे, रमेश चौधरी आरिगपूडि, महीप सिंह, सिद्धेश्वर हलधर, दुर्गा प्रसाद पटनायक, राम चन्द्र देव, डा० मल्लिक मोहम्मद । कुछ भाषाओं से संबंधित निबंध संगोष्ठी में पढ़े नहीं जा सके । सभी को एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने का विचार है ।

देश की सदियों पुरानी सांस्कृतिक एकता पर प्रकाश डालते हुए अध्यक्षा डा० महिषी ने अहिंदी भाषी क्षेत्रों के हिंदी लेखकों के योगदान का सर्वेक्षण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्तुत किया और आशा व्यक्त की कि वह दिन दूर नहीं जबकि अहिंदी भाषी हिंदी लेखक हिंदी भाषी लेखकों से बाजी मार लें।

5. भारतीय भाषा समिति का प्रथम अधिवेशन

आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास के संबंध में मार्ग दर्शन देने के लिए शिक्षा मंत्रालय के तत्वावधान में संगठित भारतीय भाषा समिति का प्रथम अधिवेशन 26 नवंबर 1966 को विज्ञान भवन में संपन्न हुआ। अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए विदेश मंत्री श्री एम0 सी0 चागला ने कहा कि सभी प्रादेशिक भाषाओं का प्रतिनिधित्व कर सकने वाली हिंदी ही अंग्रेजी को अपदस्थ करके सम्पर्क भाषा का स्थान ग्रहण कर सकती है।

चतुर्थ पंचवर्षीय योजना में आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास के लिए 585 लाख रुपए की व्यवस्था की गई है।

विविध

- देवनागरी में तार भेजने वालों की संख्या बढ़ी

1965-66 में देश में देवनागरी लिपि में 341000 तार भेजे गए। यह संख्या पिछले वर्ष की तुलना में 53 हजार अधिक है। इस वर्ष सबसे अधिक हिंदी तार (154442) उत्तर प्रदेश में बुक हुए। मध्य प्रदेश में 54431 और बिहार में 42481 तार हिंदी में बुक हुए। अहिंदी भाषी राज्यों में सबसे अधिक महाराष्ट्र में (42333) और सबसे कम केरल (19) में हिंदी तार बुक हुए।

- सिंधी को मान्यता

भारत सरकार ने सिंधी को संविधान की आठवीं सूची में सम्मिलित करके उसे मान्यता प्रदान करने का निर्णय किया है। इसके लिए संविधान में विधिवत् संशोधन करने की कार्रवाई शीघ्र ही की जाएगी।

- केन्द्रीय लघु उद्योग संगठन में हिंदी

लघु उद्योगपतियों की जानकारी व मार्गदर्शन के लिए अब तक लगभग 500 पुस्तिकाएं तथा रिपोर्टें और बहुत से फार्म हिंदी में प्रकाशित हो चुके हैं।

हिंदी प्रकाशन अनुभाग में कार्यालयीन कामकाज हिंदी में होने लगा है।

--0--

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजधानी में

केरल की 'बांसुरी' की गूंज

नवंबर मास में राजधानी की साहित्यिक गतिविधियों के केन्द्रबिन्दु केरल के महाकवि जी0 शंकर कुरुप रहे। 19 नवंबर को उन्हें भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रायोजित एक लाख रुपये का पुरस्कार दिया गया। यह पुरस्कार उनके ओटक्कुषल (बांसुरी) नामक कविता-संग्रह पर दिया गया है जिसे 1920 से 1958 तक के समस्त भारतीय साहित्य की सर्वश्रेष्ठ कृति माना गया है। पुरस्कार के साथ महाकवि को वाग्देवी की कांस्यमूर्ति भी भेंट की गई। समारोह की अध्यक्षता तथा पुरस्कार समर्पण कार्य राजस्थान के राज्यपाल डा0 सम्पूर्णानंद ने सम्पन्न किया।

यह पुरस्कार महाकवि की अनेक वर्षों की साहित्य साधना का फल है। प्रथम विश्व युद्ध के बाद ही उनकी रचनाओं को मलयालम भाषी जनता में आदर और सम्मान मिलने लगा था और केरल वासी उन्हें प्यार से 'जी' कह कर संबोधन करने लगे थे। मलयाली साहित्य जगत के तीन दीप-स्तम्भ - कुमारन् आशान, वल्लतोल नारायण मेनन और उल्लूर परमेश्वर अय्यर - से इन्होंने प्रकाश ग्रहण किया किंतु सबसे अधिक प्रभाव वल्लतोल का पड़ा। इसके अतिरिक्त विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर की गीतांजलि का मलयालम में अनुवाद करने के बाद वे चराचर जगत में व्याप्त परब्रह्म के साथ रागात्मक संबंध स्थापित करने में सफल हुए और इस प्रकार 'रहस्यवादी' कविता की ओर उन्मुख हुए। उपर्युक्त पुरस्कृत कृति की अधिकांश कविताओं में इसी रागात्मक संबंध की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है।

चराचर जगत में समान रूप से व्याप्त परमशक्ति के साथ हार्दिक संबंध स्थापित कर लेने के बाद साधक में धर्म, जाति अथवा देशगत क्षुद्र भावनाओं का पूर्ण अवसान स्वाभाविक ही है। महाकवि इन क्षुद्र भावनाओं से बहुत ऊपर उठ चुके हैं।

समस्त हिंदी जगत ने मलयालम भाषा को दिए गए इस सर्वोच्च सम्मान से हर्ष तथा गर्व अनुभव किया। राजधानी में इस की अभिव्यक्ति उन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनेक गोष्ठियों के रूप में हुई जो श्री शंकर कुरुप का सान्निध्य प्राप्त करने के उद्देश्य से विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं द्वारा आयोजित की गई।

20 नवंबर को भारतीय ज्ञानपीठ ने महाकवि की अध्यक्षता में एक साहित्य गोष्ठी आयोजित की जिस में विभिन्न भारतीय भाषाओं के लेखकों ने आधुनिक राष्ट्रीय साहित्य के निर्माण की समस्या पर विचार व्यक्त किए। इस गोष्ठी में डा० निहार रंजन रे, डा० रंगनाथ राम चंद्र दिवाकर, श्री देव बरुआ, डा० रामधारी सिंह दिनकर, प्रो० वी० सीतारमैया, डा० गोपाल सिंह, श्री अज्ञेय, श्री बालकृष्ण राव और डा० प्रभाकर माचवे आदि ने भाग लिया।

22 नवंबर को केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय और वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की ओर से महाकवि के सम्मान में एक साहित्य गोष्ठी आयोजित की गई जिसकी अध्यक्षता संयुक्त शिक्षा सलाहकार डा० परमेश्वरदीन शुक्ल ने की। प्रो० चन्द्रहासन तथा डा० विश्वनाथ प्रसाद ने निदेशालय तथा आयोग की ओर से महाकवि का अभिनंदन किया। इस अवसर पर महाकवि ने अपनी एक कविता गाकर सुनाई। राष्ट्रभाषा हिंदी के महत्त्व को पूर्णतः स्वीकार करते हुए महाकवि ने कहा कि अंग्रेजी भाषा को चिरकाल तक बनाए रखने से भारतीय भाषाओं तथा उनके साहित्य के विकास में निश्चय ही बाधा पड़ेगी। उन्होंने कहा कि अंग्रेजी भाषा कामधेनु हो सकती है किन्तु वह माँ का स्थान प्राप्त करने की अधिकारिणी नहीं है।

मृदु-भाषी, विनम्र, राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक एकता के मूर्त स्वरूप महाकवि श्री शंकर कुरुप इस समय पैंसठ वर्ष के हैं। इनकी रचनाओं से मलयालम भाषा तो समृद्ध हुई ही, हिंदी का गौरव भी बढ़ा है।

पुरस्कृत कृति का हिंदी अनुवाद 'बांसुरी' शीर्षक से ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित हो चुका है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* प्रादेशिक अंचल में

– आंध्र प्रदेश

हैदराबाद से प्रकाशित हिन्दी दैनिक 'मिलाप'

सूचना और प्रसारण मंत्री श्री राजबहादुर ने हैदराबाद से प्रकाशित प्रथम हिंदी दैनिक 'मिलाप' का उद्घाटन किया। मुख्य मंत्री श्री ब्रह्मानंद रेड्डी ने समारोह की अध्यक्षता करते हुए दैनिक 'मिलाप' का स्वागत किया और कहा कि वस्तुतः हिंदी का कोई विरोधी नहीं है। हिन्दी 45 करोड़ लोगों के राष्ट्र की सामान्य भाषा है।

– उड़ीसा

भारतीय भाषाओं में गोर्की साहित्य

भारत-रूस सांस्कृतिक संघ की राष्ट्रीय परिषद ने निर्णय किया है कि मैक्सिम गोर्की के साहित्य का अधिक से अधिक भारतीय भाषाओं में प्रकाशन किया जाए। गोर्की की जन्म-शताब्दी मार्च 1968 में मनाई जायगी।

– उत्तर प्रदेश

श्री प्रभुदयाल मीतल का सम्मान

ब्रज के साहित्यकार श्री प्रभुदयाल मीतल का मथुरा के एक समारोह में उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री विश्वनाथ दास, श्री मोरारजी देसाई तथा श्री राज बहादुर द्वारा अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर श्री मीतल के ग्रंथ 'ब्रज का सांस्कृतिक इतिहास' का विमोचन किया गया।

दक्षिण भाषाओं में लिखित जैन साहित्य

अलीगढ़ में पर्यूषण व्याख्यान माला समिति जैन समाज की ओर से शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के डा० आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये और जबलपुर विश्वविद्यालय के डा० हीरा लाल जैन को अभिनंदन पत्र भेंट किये गये। इस अवसर पर हिंदी में भाषण करते हुए डा० उपाध्ये ने कहा कि कन्नड़, तमिल आदि दक्षिण भाषाओं में लिखित जैन साहित्य का हिन्दी अनुवाद होना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलूक स्थल का पुनर्निर्माण

प्रयाग में सुप्रसिद्ध संत मलूक दास की साधना भूमि 'मलूक स्थल' पर शीघ्र निर्माण कार्य प्रारंभ होगा । यहां भारत के प्रमुख संतों की मूर्तियों और वाणियों से सुसज्जित उपासना भवन तथा सूफी साहित्य का संग्रहालय बनाने की योजना है ।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के शासी निकाय में परिवर्तन

भारत सरकार ने स्वर्गीय श्री बलवन्त राय मेहता के स्थान पर मद्रास के श्री एस० सत्यनारायण को हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के प्रथम शासी निकाय का सदस्य नियुक्त किया है ।

– मध्य प्रदेश

संस्कृत में नेहरू जी की जीवनी

स्वर्गीय नेहरू जी के 77 वें जन्म-दिवस पर भोपाल में उनकी जीवनी संस्कृत में प्रकाशित की गई । इसके लेखक मध्य प्रदेश सर्किल के पोस्ट मास्टर जनरल श्री पेलंकर हैं । संस्कृत साहित्य में इस प्रकार का यह पहला प्रयास है ।

– पश्चिम बंगाल

बंगाल हिन्दी मंडल द्वारा शोध कार्य के लिए छात्रवृत्ति

बंगाल हिन्दी मंडल ने हिन्दी में शोध-कार्य के लिए इस वर्ष से 200 रुपए मासिक की एक छात्रवृत्ति आरंभ की है जो शोधकर्ता को 3 वर्ष तक दी जाएगी । मंडल के अध्यक्ष श्री लक्ष्मी निवास बिड़ला के मार्ग-दर्शन में यह संस्था हिन्दी के विकास के लिए महत्वपूर्ण कार्य कर रही है । इस वर्ष यह छात्रवृत्ति श्री मृत्युंजय उपाध्याय को देने का निर्णय किया गया है ।

कामायिनी की मूल प्रति का प्रकाशन

स्वर्गीय जय शंकर प्रसाद के पुत्र श्री रत्न शंकर प्रसाद ने कलकत्ता में बताया कि श्री कृष्ण कुमार बिड़ला के सहयोग से 'कामायिनी' की मूल प्रतिका शीघ्र ही प्रकाशन किया जा रहा है । भारतीय साहित्य में इस तरह का यह प्रथम प्रकाशन होगा । पूरी पुस्तक 'आफसैट' पद्धति से छपेगी ।

– हरियाणा हिन्दी भाषी राज्य होगा, यह घोषणा मुख्य मंत्री श्री भगवत दयाल शर्मा ने की ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* विश्वविद्यालयों में

मैसूर विश्वविद्यालय का हिंदी विभाग - एक परिचय

मैसूर विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग का श्रीगणेश एक प्राध्यापक को लेकर 1 जुलाई 1938 में हुआ था । उस से विकास करते-करते आज यह एक विशाल संस्था है जिसकी मुख्य पीठिका "मानस गंगोत्री" में है तथा शाखाएं महाराजा कालेज, युवराज कालेज, सायंकालीन कालेज तथा संगीत-नाटक कालेज में फैली हुई हैं । विभागाध्यक्ष प्रो० एन० नागप्पा तथा रीडर डा० हिरण्मय और श्री जी० सच्चिदानंदन के अतिरिक्त सात प्राध्यापक इस समय हिंदी विभाग में कार्य कर रहे हैं । अब तक विभाग से 50 छात्र हिंदी में एम० ए० कर चुके हैं । इस समय एम० ए० (हिंदी) प्रथम वर्ष में 11 और द्वितीय वर्ष में 3 छात्र अध्ययन कर रहे हैं ।

अध्यापन के अतिरिक्त, विभाग के अंतर्गत शोध कार्य की भी व्यवस्था है । 15 छात्र पी एच०डी० के लिए शोध कार्य में लगे हुए हैं । इनमें से दो छात्रों के शोध-प्रबंध परीक्षा बोर्ड के विचाराधीन हैं । शोध-कार्य निम्नलिखित विषयों पर हो रहा है :-

(1) हिंदी और कन्नड़ की साहित्यिक प्रवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन
(2) हिंदी और कन्नड़ में अलंकार शास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन
(3) हिंदी और कन्नड़ में श्री कृष्ण की संकल्पना - एक तुलनात्मक अध्ययन
(4) हिंदी और कन्नड़ में श्री राम की संकल्पना - एक तुलनात्मक अध्ययन
(5) सन् 1800 के बाद हिंदी और कन्नड़ की साहित्यिक प्रवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन
(6) हिंदी के संत साहित्य और कन्नड़ के शरण साहित्य में अभिव्यक्त निर्गुण तत्व का तुलनात्मक अध्ययन
(7) हिंदी और कन्नड़ में राम-काव्य के पात्रों का तुलनात्मक अध्ययन
(8) हिंदी की तकनीकी शब्दावली का विकास
(9) दक्षिण भारत की संत परंपरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(10) बसव और कबीर का तुलनात्मक अध्ययन

(11) साहित्यिक भाषा खड़ी बोली हिंदी का विकास

(12) सन् 1947 तक के आधुनिक हिंदी तथा कन्नड़ गीति-काव्य का तुलनात्मक अध्ययन

(13) हिंदी और कन्नड़ के लोक साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन

(14) दक्खिनी साहित्य का इतिहास - सन् 1400 से 1800 तक

(15) आधुनिक हिंदी उपन्यासों के शब्द जो हिंदी शब्द-सागर में नहीं हैं।

छात्रों में शोध-वृत्ति को जागृत करने के उद्देश्य से विभाग की ओर से 28-12-65 को डा० भालचन्द्र तैलंग की अध्यक्षता में एक सेमिनार किया गया जिस में शोध-कर्ताओं ने विभिन्न विषयों पर शोध निबंध पढ़ कर सुनाए।

हिंदी के उच्च अध्ययन को प्रोत्साहन देने के लिए 29-5-65 से 7-6-65 तक एक ग्रीष्मकालीन सत्र आयोजित किया गया जिसमें दक्षिण भारत से 25 अध्यापकों ने भाग लिया। प्रो० एन० नागप्पा इस के निदेशक तथा डा० हिरण्मय और श्री जी० सच्चिदानंदन इसके सचिव थे।

अध्यापन और शोध कार्य के अतिरिक्त विभाग से "मानसी" नामक साहित्यिक पत्रिका 1965 से प्रकाशित हो रही है। हिंदी के उच्च अध्ययन को प्रोत्साहन देने के लिए 1965 में एम० ए० (द्वितीय वर्ष) के तीन छात्रों को भारत सरकार ने छात्रवृत्तियां दी थीं।

प्राध्यापकों के आदान-प्रदान के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा संचालित योजना के अंतर्गत 1965 में कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रो० कल्याणमल लोढा ने आधुनिक हिंदी कविता पर पांच भाषण दिए। 1966 में इस योजना के अंतर्गत डा० भगीरथ मिश्र ने तुलसीदास पर पांच भाषण दिए।

मैसूर विश्वविद्यालय का हिन्दी विभाग हिन्दी के प्रचार-प्रसार और विकास में निःसंदेह महत्वपूर्ण योगदान कर रहा है।

- 0 -

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* विदेशों में

विदेशी विश्वविद्यालय, जहां हिंदी शिक्षण की व्यवस्था है -

(गतांक से आगे)

पश्चिम जर्मनी

(1) फ्री यूनिवर्सिटाट, बर्लिन । (2) रिहीन्श फ्रीडरिख विल्हेल्म्स यूनिवर्सिटाट, बोन । (3) जोहान वोल्फगांग गोएटे यूनिवर्सिटाट, फ्रैंकफर्ट । (4) एलबर्ट लुडविग्स यूनिवर्सिटाट, फ्रीबर्ग । (5) जार्ज आगस्ट यूनिवर्सिटाट, गोएटिंगेन । (6) हेम्बर्ग यूनिवर्सिटाट, हेम्बर्ग । (7) रूप्रेख्ट कार्ल यूनिवर्सिटाट, हीडलबर्ग । (8) क्रिस्टियान अलब्रेख्ट यूनिवर्सिटाट, कील । (9) कील यूनिवर्सिटाट, कोलन । (10) जोहानेस गुटेनबर्ग यूनिवर्सिटाट, मेंत्स । (11) फिलिप्स यूनिवर्सिटाट, मारबर्ग । (12) लुडविग मैक्सिमिलियन्स यूनिवर्सिटाट, म्यूएनशेन (म्यूनिख) । (13) वेस्टफेलिश विल्हेल्म्स यूनिवर्सिटाट, म्युन्स्टर । (14) यूनिवर्सिटाट देस सारलैंडस, सारब्रुकेन । (15) एबरहार्ड कार्ल्स यूनिवर्सिटाट, ट्यूबिंगेन ।

(समाप्त)

ऊपर का विवरण शिक्षा मंत्रालय की पत्रिका 'एज्यूकेशनल फैसिलिटीज़ इन इण्डिया एण्ड एब्रोड' के हेमन्त 1965 के अंक के आधार पर तैयार किया गया है ।

पोप द्वारा हिंदी के लेखक का सम्मान

हिंदी के साहित्यकार तथा अंग्रेजी दैनिक 'नागपुर टाइम्स' के प्रबंध संपादक श्री अनंत गोपाल शेवड़े ने हाल ही में अपनी यूरोप यात्रा के दौरान रोम में पोप पाल से भेंट की और उन्हें अपने हिंदी उपन्यास 'ज्वालामुखी' का अमेरिका से प्रकाशित अंग्रेजी अनुवाद 'द वाल्केनो' भेंट किया । पोप पाल ने उनका अभिनंदन किया और उनका सम्मान करने के लिए उन्हें एक पदक प्रदान किया ।

-- मास्को में प्रेमचंद की पुस्तकों की प्रदर्शनी

स्वर्गीय प्रेमचंद की तीसवीं पुण्यतिथि के अवसर पर मास्को स्थित विदेशी भाषा पुस्तकालय में उनकी पुस्तकों की एक प्रदर्शनी आयोजित की गई । विदेश में सर्वप्रथम सन् 1926 में प्रेमचंद की 'दूसरी पत्नी' नामक कहानी का अनुवाद प्रकाशित हुआ था । तब से अब तक रूस की 12 भाषाओं में उनकी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं । इनकी संख्या 10 लाख तक पहुंच गई है ।

-- 0 --

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

078085

0 पाठकों से

हिन्दी समाचार जगत के अब तक प्रकाशित अंकों के सम्बन्ध में पाठकों की ओर से अनेक सुझाव-सम्मतियां, शुभकामनाएं और बधाइयां प्राप्त होती रही हैं। इसके लिए हम उनके आभारी हैं। इन सुझावों, सम्मतियों आदि से हमें पर्याप्त मार्गदर्शन और प्रोत्साहन मिला है। आशा है आगे भी उनसे सहयोग और मार्गदर्शन बराबर मिलता रहेगा।

पाठकों के बहुमूल्य सुझावों को ध्यान में रखते हुए यह निर्णय किया गया है कि

(1) पत्रक के मुद्रण की व्यवस्था यथाशीघ्र कराई जाए।

(2) हिन्दी के नए प्रकाशनों (साहित्यिक और तकनीकी) की जानकारी देने के लिए पत्रक में नया स्तंभ प्रारंभ किया जाए। इस स्तंभ में प्रकाशकों से निवेदन किया जा रहा है कि वे हमारे पास अपने नए प्रकाशनों की प्रतियां संक्षिप्त विवरण (लेखक और प्रकाशन का नाम और दाम) के साथ यथाशीघ्र भिजवाने की व्यवस्था करें ताकि पाठकों को जानकारी दी जा सके।

(3) विचार गोष्ठी के लिए नया स्तंभ प्रारंभ करने का विचार नहीं है। पत्रक का मुख्य उद्देश्य समाचार और सूचना देना है, विचार व्यक्त करना नहीं। इसी कारण विचार प्रधान लघु लेख भी प्रकाशित नहीं किए जा सकते, हां, हिन्दी के प्रचार-प्रसार की जानकारी देने वाले लेख अवश्य प्रकाशित किए जा सकेंगे।

(4) अनुसंधान संबंधी सूचना जिस तरह अभी विश्वविद्यालय स्तंभ के अंतर्गत दी जा रही है उसी तरह अधिक विस्तार से देने का यत्न किया जाएगा।

(5) पत्रक को निःशुल्क बांटने का ही विचार किया गया है।

(6) पत्रक का नाम काफी सोच-विचार के बाद तय किया गया था। इस संबंध में जो सुझाव प्राप्त हुए हैं उन पर पहले भी विचार किया गया था। कुछ ऐसी व्यावहारिक कठिनाइयां हैं कि पत्रक का नाम बदलने में असमर्थता है। पत्रक संख्या आर0 एन0_12817/66 द्वारा पंजीयित हो चुका है।

संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निदेशालय के प्रकाशन

मानक-ग्रंथ

1. सम-स्थानिकों के संसार में (In the World of Isotopes) लेखक : वी० मेजेन्सेफ
   अनु० जगदीश चंद्र सोनी पृष्ठ संख्या : 98 मूल्य : 2.90
2. अर्धचालक और उनके उपयोग (Semi-Conductors and their use)
   लेखक : ए० एफ० योफी अनु० उदितकुमार शर्मा पृष्ठ संख्या: 125 मूल्य: 3.75
3. शुद्धघन ज्यामिति प्रवेशिका (An Introduction to pure solid Geometry)
   ले० गणेश सखाराम महाजनि अनु०हरीश्वरप्रसाद सिन्हा पृष्ठ संख्या 102 मूल्य 4.15
4. अश्रव्य ध्वनियां (Sounds we cannot hear) ले० : वी० कुद्रयावत्सेव
   अनु० श्री पुरुषोत्तमलाल जैन पृष्ठ संख्या : 127 मूल्य : 3.10
5. कार्बोहाइड्रेट और ग्लाइकोसाइड ले०डा० फूलदेव सहाय वर्मा पृष्ठ : 183 मूल्य: 4.85
6. भारतीय परंपरा (Indian Heritage) ले० : प्रो० हुमायून् कबिर
   अनु० : महेंद्र चतुर्वेदी पृष्ठ सं० : 122 मूल्य : 2.50
7. अंतर्राष्ट्रीय संबंध ले० महेशप्रसाद टण्डन पृष्ठ सं० : 284 मूल्य : 8.80
8. भारत की वित्तीय शासन व्यवस्था ले० हरिगोपाल परांजपे पृष्ठ सं०: 268 मूल्य: 8.50
9. समीकरण सिद्धांत ले० डा० श्रीराम सिन्हा पृष्ठ सं० : 100 मूल्य : 5.35
10. माताओं और शिशुओं के रोगों की रोकथाम ले० : ओ० मकेयेवा
    अनु० दिनेशचंद्र शर्मा पृष्ठ सं० : 198 मूल्य : 4.00
11. उल्काएँ (Meteors) ले० वी० फेडिंस्की अनु० पवनकुमार जैन पृष्ठ : 122 मूल्य: 2.60
12. रहस्यमय विश्व (The Mysterious Universe) ले० : जेम्स जीन्स
    अनु० : श्रीमती अनन्तलक्ष्मी अम्माल पृष्ठ संख्या : 110 मूल्य : 2.80
13. प्रकाश तरंगें और उनके उपयोग (Light Waves and Their Uses)
    ले० ए० ए० माइकेलसन अनु० ओम प्रकाश वर्मा पृष्ठ सं० : 146 मूल्य: 4.90
14. भाषा, सत्य और तर्क-शास्त्र (Language, Truth and Logic) ले० जे० ए० अय्यर
    अनु० : भूपेंद्रनाथ सान्याल पृष्ठ सं० : 148 मूल्य : 2.95
15. अपना हृदय सबल बनाइए (Strengthen Your Heart) ले० वी० जेलेनिन पृष्ठ : 142

कोश साहित्य

1. पारिभाषिक शब्द-संग्रह (अंग्रेजी-हिंदी) (Consolidated Glossary of Technical Terms) पृष्ठ संख्या : 1370 मूल्य : 12.00
2. शब्दार्थ मीमांसा ले० रामचंद्र वर्मा पृष्ठ सं० : 362 मूल्य : 11.50

भाषा पत्रिका

अब तक 19 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। एक अंक का मूल्य 1.25

भाषा के विशेषांक

1. शांति-रक्षा अंक पृष्ठ संख्या : 148 मूल्य : 4.50
2. द्विवेदी स्मृति विशेषांक पृष्ठ संख्या : 270 मूल्य : 12.50

निदेशालय के सभी प्रकाशन अग्रिम धन भेजकर **प्रबन्धक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल्ली-8 और 31, थिएटर कम्युनिकेशन्स बिल्डिंग कनॉट प्लेस, नई दिल्ली** से खरीदे जा सकते हैं।

प्रो० ए० चंद्रहासन, निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित। संपादक: परशुराम शर्मा

महा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, मिन्टो रोड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar